Sunni Aur Wahabi ki Pahchan

बुज़ूर्गों की नज़र में

सुन्नी और वहाबी की पहचान

मुअल्लिफ़:

अताए ख्वाजा हज़रत अल्लामा मौलाना

अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

दामे ज़िल्लहु

मक्तबा क़ादरीया

बुज़ुर्गों की नज़र में

सुन्नी और वहाबी की पहचान

मुअल्लिफ़
अताए ख्वाजा हज़रत अल्लामा मौलाना
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी
दामा ज़िल्लुहू

नाशिर
अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़
खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

नाम किताब : बुज़ुर्गों की नज़र में
"सुन्नी और वहाबी की पहचान"

मुअल्लिफ़ : अताए ख़्वाजा हज़रत अल्लामा मौलाना
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी
दामा ज़िल्लुहू

तक़रीज़े जलील : यादगारे अस्लाफ़ पैकरे इल्मो अमल
बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा
अलहाज अश्शाह मुफ़्ती अब्दुल मन्नान
साहब क़िब्ला मद्दाज़िल्लुहुल आली

तसहीहे किताबत : हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन अहमद सा.
क़ादरी बरकाती

सने इशाअत अव्वल : 1432 हि. मुताबिक़ 2011 ई.

तादाद :

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर
(मोबाइल : 9827014799)

-: मिलने के पते :-

मक्तबा क़ादरिया, इटवा बाज़ार, सिद्धार्थ नगर (यू.पी.)

अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

नूरुद्दीन कुतुबख़ाना, दरगाह शरीफ़ के पास, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

इन्तिसाब

महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम
और
आपके चारों ख़ुलफ़ा
और
आप की प्यारी बेटी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा
और
आपके नूरे ऐन इमाम हसन और इमाम हुसैन
और
आपकी आल मेरे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म व
हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
और
आपके आशिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा व मुर्शिदे आज़म मुस्तफ़ा रज़ा
और
आप की उम्मत के वली मेरे पीर व मुर्शिद मौलाना शाह
मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी
व
मेरे करीम मजज़ूब बुज़ुर्ग हुज़ूर दरया शाह बाबा
रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन
के नाम
जिन की दुआओं का अबरे करम मुझ पर बरस रहा है
और
क़ियामत तक बरसता रहेगा........इन्शाअल्लाहो तआला

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

फ़िहरिस्ते मज़ामीन

- पेशे लफ़्ज़ 7
- तक़रीज़े जलील 9
- तअस्सुर गिरामी 10
- नज़रे सानी 11
- वहाबी, देवबन्दी फ़िर्के के ख़िलाफ़ शिद्दत व सख़्ती की वजह 18
- आला हज़रत सुन्नियत की अलामत है 19
- आला हज़रत से बुग़्ज़ रखने वाला वहाबी नहीं तो गुमराह ज़रूर है 20
- बद मज़हबों से मेल जोल रखना अख़्लाक़ नहीं है 21
- अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर ने बद अक़ीदा को खाने से उठा कर भगा दिया 22
- रसूलुल्लाह ने मुनाफ़िक़ को मस्जिद से निकाला 23
- आला हज़रत ने हदीस से बद मज़हब की पहचान बताई 24
- बद मज़हब की ताज़ीम करना इस्लाम को ढाना है 26
- रसूलुल्लाह क़ब्र व हश्र में काम आएँगे 27
- ताबई ने बद मज़हबों से कुरआन व हदीस सुनना पसन्द नहीं किया 30
- बद मज़हब से आधा लफ़्ज़ भी सुनना पसन्द न किया 31
- एक जन्नती, बहत्तर जहन्नमी 33
- जन्नती फ़िर्के की पहचान 34
- सहाबा-ए-किराम का तरीक़ा 35
- वहाबी, देवबन्दी सहाबा के तरीक़े पर नहीं है 37
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा अल्लाह तआला के मुतअल्लिक़ 38
- ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी का अक़ीदा कि नबी को ख़ुदा का नूर मानना कुफ़्र है 39

- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी खुदा का नूर है 40
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को इल्मे ग़ैब नहीं है 42
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी को इल्मे ग़ैब है 44
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को कुछ ताक़त नहीं है 47
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी को हर ताक़त हासिल है 48
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी और उम्मती सब बराबर हैं 50
- ईमान वालों का अक़ीदा कि हमारे नबी, जुम्ला अम्बिया व रुसुल से अफ़ज़ल हैं 51
- कुरआन में है कि अल्लाह व रसूल ने उनको दिया 54
- हदीसे बुखारी, कि नबी बांटते हैं 55
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी के चाहने से कुछ नहीं होता 56
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी के चाहने से किब्ला बदल दिया गया 56
- वहाबी, देवबन्दी का अकीदा कि मजलिसे मीलाद शरीफ़ हर हाल में हराम है 58
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी की मीलाद कन्हैया के जनम की तरह है 58
- ईमान वालों का अक़ीदा कि ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कारे ख़ैर और महबूब अमल है 59
- ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कुरआन से साबित है 60
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को सिफ़ारशी और वकील बनाने वाला मुशरिक है 62
- वहाबी नज्दी का अक़ीदा कि या रसूलल्लाह कहनेवाला काफ़िर है 64
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी सिफ़ारशी और वकील हैं 65
- या रसूलल्लाह कहना कुफ्र नहीं बल्कि सहाबा की सुन्नत है 67
- अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह कहना हदीस सेसाबित है 68

- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि रसूलुल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गए 69
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी ज़िन्दा हैं 70
- वहाबी का अक़ीदा कि नबी की क़ब्र बुत है 72
- ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी की क़ब्र पर गुम्बद हदीस से साबित है 73
- मज़ारेअनवर की ज़ियारत ज़रीआ-ए-नेजात है 76
- मोमिन दुआ मांगते वक़्त मुंह क़ब्रे अनवर की तरफ़ करे 77
- वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि अम्बिया ऐबदार होते हैं 79
- मौलवी अशरफ़ अली थानवी को अंग्रेज़ छः सौ रुपये माहाना तन्ख़्वाह देते थे 80
- ईमान वालों का अक़ीदा कि अम्बियाए किराम बेऐब और बेमिसाल होते हैं 82
- नबी को अपनी तरह कहना काफ़िरों का तरीक़ा है 83
- सहाबा हुज़ूर को हर ऐब से पाक जानते थे 85
- वहाबियों का अक़ीदा कि कव्वा खाना सवाब है 87
- हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द का फ़तवा 89
- माख़ज़ व मराजेअ़ 92
- कुतुबे वहाबिया, देवबन्दिया 95
- याद दाश्त ! 96

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

पेशे लफ़्ज़

मोमिन वह है जो उनकी इज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नज्दी तो मरे दिल से

हज़रात ! काफ़ी अर्से से यह ख़्वाहिश थी कि एक ऐसी किताब तरतीब दी जाए जो मुख़्तसर मगर जामेअ़ हो और उसमें बद मज़हब व बद अक़ीदा लोगों के अक़ाइदे बातिला मोअ़तबर हवाला जात के साथ बयान किये गए हों ताकि मुसलमान ख़ास कर हमारा नौजवान तबक़ा उन बद मज़हबों और बद अकीदों की कुफ़्री तहरीरों और बे अदबी में डूबी हुई इबारतों को देखकर इबरत हासिल करें और उन वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों से दूर रहें और उनको अपने से दूर रखें ताकि ईमान महफ़ूज़ रहे

ऐ ईमान वालो ! यक़ीन जान लो ! कि हर फ़र्ज़ से बड़ा और अहम फ़र्ज़ ईमान की हिफ़ाज़त है और ईमान महबूबे ख़ुदा मुश्फ़िक़ व मेहरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी और मोहब्बत का नाम है।

हदीस शरीफ़ :

عَنْ اَنَسٍ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَايُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ٥

तर्जमा : हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के माँ बाप, बैटे और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 7 मुस्लिम, जि.1, स.49)

आशिक़े रसूल आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं यह
इन सा नहीं इन्सान वह इन्सान हैं यह

क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान यह कहता है मेरी जान हैं यह

इस किताब में गुस्ताख़ाने रसूल की किताबों के हवाले के साथ उनकी गुस्ताखाना इबारतों को लिख दिया है ताकि हर मुसलमान उन बद मज़हबों और बे अदबों को पहचान लें और उनसे बचते रहें और अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहें।

ठन्डे दिल से पढ़िये और हक़्क़ो सदाक़त के साथ फ़ैसला कीजिये कि यक़ीनन यहूदो नसारा और मुश्रेकीन से भी बदतर काफ़िर व मुरतद वहाबी, देवबन्दी और तब्लीगी हैं।

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा

अनवार अहमद क़ादरी

1 रजबुल मुरज्जब सन् 1432 हि.
मुताबिक़ 4 जून सन् 2011
सर बराहे आला अल जामिअतुल ग़ौसिया
ग़रीब नवाज़, खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

तक़रीज़े जलील

यादगारे अस्लाफ़ बुरहाने अख़्लाफ़, पैकरे इल्मो अमल बहरुल उलूम
हजरत अल्लामा मौलाना अलहाज
अश्शाह मुफ़्ती अब्दुल मन्नान साहब क़िब्ला आज़मी
दामत बरकातुहुमुल आलिया
शैखुल हदीस शमसुल उलूम घूसी जि. मऊ (उ. प्र.)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ○

अम्मा बअ़द ! हज़रत मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी को पहली बार मैंने उर्से क़ासमी मारेहरा शरीफ़ में देखा तो अच्छे नज़र आए, इनकी शक्लो शबाहत, लिबास और वज़अ़, इनकी पुर तासीर शेफ़्ता बयानी और शेवाए गुफ़्तारी यह अदा पसन्द आई। सीधी सादी शुस्ता बयानी से पूरी महफ़िल में एक रंग छा जाता है।

अज़ीज़म मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी का रिसाला बुज़ुर्गों की नज़र में ''सुन्नी और वहाबी की पहचान'' दो एक जगह से मौलाना मोसूफ़ से सुना तो यह रिसाला मुझे पसन्द आया। क्योंकि मैं ख़ुद देखने से माज़ूर था, तो अल्हम्दु लिल्लाह वही शेवा बयानी और वही नर्म गुफ़्तारी और वही तसलसुल और दिल आवेज़ी।

मौला तआला मोसूफ़ की तहरीर को भी कुबूले आम बख़्शे और मुसलमानों के दीन व ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

अब्दुल मन्नान आज़मी
शमसुल उलूम, घोसी, ज़ि. मऊ (उ.प्र.)
25 जुमादल उख़रा सन् 1432 हि.

तअस्सुरे ग्रामी

मुफ़क्किरे इस्लाम, पीरे तरीक़त हज़रत अल्लामा अलहाज
गुलाम अब्दुल क़ादिर साहेब क़िब्ला अलवी।
शहज़ादए शुऐबुल औलिया, सज्ज़ादा नशीन ख़ानक़ाहे फ़ैज़ुर्रसूल,
नाज़िमे आला दारुल उलूम फ़ैज़ुर्रसूल, बराऊँ शरीफ़ जि. सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥

अम्मा बअ़द ! ज़ेरे नज़र किताब को जस्ता जस्ता देखने से मालूम हुआ कि मोअ़तक़िदाते अहले सुन्नत के इस्बात नीज़ फ़िर्क़हा–ए–बातिला की तरदीद में यह किताब अपनी मिसाल आप है। अम्बियाए किराम और औलिया-ए-इज़ाम की शान में अकाबिरे दय्याबना, वहाबिया वग़ैरहा मिनल फ़िरक़िल बातिला की जानिब सेकी गई गुस्ताख़ियों को पूरी दयानत दारी के साथ बा हवाला नक़्ल करने के बाद उससे ज़्यादा मुदल्लल और हवाला जाती अन्दाज़ में उनकी शाने अज़मत को उजागर करने की कामयाब कोशिश की गई है। आक़ाए दो आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब, इख़्तियार और हयाते पाक को कुरआनो हदीस की रोशनी में जिस खूब सूरत पेराए में तहरीर किया है, यह फ़ाज़िले मुसन्निफ़, मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत मौलाना अलहाज अनवार अहमद साहब क़िब्ला क़ादरी ज़ीदत महासिनहू ही का हिस्सा है। किताब के मुन्दरजात को सन्जीदगी से मुतालआ करने के बाद कोई भी हक़ पसन्द क़ारी मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता दुआ है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े में इस किताब को मक़बूले अनाम बनाए और तज़बज़ुब का शिकार अवाम के लिये ज़रीआ-ए-हिदायत बनाए।

आमीन बिजाहि हबीबिही सय्यिदिल मुरसलीना अलैहि व अला आलिही अकरमुस्सलातो वत्तस्लीम

दुआगो

गुलाम अब्दुल क़ादिर अलवी

2 शअ़बानुल मुअ़ज़्ज़म, सन् 1432 हि.

नज़रे सानी

जामेअ़ माकूल व मनकूल हज़रत अल्लामा मौलाना अलहाज
मुफ़्ती मोहम्मद कुदरतुल्लाह साहब
क़िब्ला रज़वी मद्दज़िल्लहुल आली
शैखुल हदीस दारुल उलूम तनवीरुल इस्लाम, अमर डोभा
ज़िला सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ٥

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيۡبِهِ الۡمُصۡطَفٰى
وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ اُوۡلِى الصِّدۡقِ وَالصَّفَا وَاَوۡلِيَآءِ اُمَّتِهٖ وَعُلَمَآءِ
مِلَّتِهٖ نُجُوۡمِ الۡهِدَايَةِ وَكُنُوۡزِ الۡعَطَاءِ

अम्मा बाद ! ज़ेरे नज़र रिसाला, बुज़ुर्गों की नज़र में ''सुन्नी और वहाबी की पहचान'' एक बहुत ही मुफ़ीद और कार आमद रिसाला है। इस रिसाले में मोअल्लिफ़ ने एक तरफ़ यह साबित करने की भरपूर कोशिश की है कि सरकार आला हज़रत इश्क़े रसूल का सरापा मुजस्समा थे। उनकी हर हर अदा रफ़्तार व गुफ़्तार, अक़्वाल व किरदार, तहरीर व तक़रीर इश्क़े रसूल के साँचे में ढली हुई थी। आपके मज़ामीन की हर हर सतर से इश्क़े रसूल के जल्वे साफ़ और नुमायाँ तौर पर महसूस होते हैं। आपके इल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहदो तक़्वा और अल हुब्बो फ़िल्लाह वल बुग़्ज़ो फ़िल्लाह को देखकर बरमला कहना पड़ता है कि आप आयतुम मिन आयाते रब्बिल आलमीन और मोअ्जेज़तुम मिन मोजिज़ाते सय्यिदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हैं। आपने अपने क़ौल व अमल, तहरीर व तक़रीर से ईमान वालों को इश्क़े रसूल की चाश्नी अता फ़रमाई है।

एक तरफ़ अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की उल्फ़त व महब्बत का दर्स दे रहे हैं तो दूसरी जानिब अहले बैते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की अक़ीदत के जाम पिलाते नज़र आते हैं और हज़रात अइम्मए किराम और

फ़ुक़हाए इज़ाम नीज़ मशाइख़े तरीक़त रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन की गुलामी और सच्ची वफ़ादारी का दर्स देते हुए दिखाई देते हैं।

अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की बारगाह के गुस्ताख़ों, हज़रात सहाबा व अहले बैत के बद गोयों और हज़रात मशाइख़े किराम ख़ुसूसन सरकार ग़ौसे आज़म व सरकार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की अज़मतों को इन्कार करने वालों से नफ़रत व बेज़ारी की ताकीद फ़रमाते हुए पूरी उम्र अज़ीज़ गुज़ार दी और बरमला एलान फ़रमाते रहे।

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
शिर्क ठहरे जिसमें ताज़ीमे हबीब
उस बुरे मज़हब पे लानत कीजिये
ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

यह भी एलान फ़रमाते रहे कि

ख़ाक हो जाएं अदू जलकर मगर हम तो रज़ा
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जाएंगे

और क्या ही ख़ूब फ़रमाया कि

सूरज उल्टे पाँव पल्टे, चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नज्दी देख ले क़ुदरत रसूलुल्लाह की

हज़रात सहाबए किराम, अहले बैते किराम, हज़रात अइम्मए मुज्तहेदीन, फ़ुक़हाए किराम और मशाइख़े तरीक़त से साबित शुदा अक़ाइद की तौज़ीह व तशरीह करके उम्मते मुस्लेमा को उसी का पाबन्द रहने की हिदायत फ़रमाते रहे। इसी को हम ''मस्लके आला हज़रत'' कहते हैं।

और दूसरी तरफ़ बुज़ुर्गों के इरशादात से यह साबित करने की कोशिश की है कि ''इस दौर में इमाम अहमद रज़ा, हक़ व बातिल की कसौटी हैं''

जब किसी शख़्स के बारे में यह मालूम करना हो कि वह सहीहुल

अक़ीदा सुन्नी है या बद अक़ीदा वहाबी, देवबन्दी तो उसके सामने आपका तज़्किरा कर दो। अगर सच्चा सुन्नी है तो मसर्रत व शादमानी के आसार उसके चेहरे से नुमायाँ हो जाएंगे वरना अगर बद मज़हब है तो उसके चेहरे से नफ़रत के आसार ज़ाहिर हो जाएंगे।

खुलूसे क़ल्ब से दुआ है कि रब्बे करीम ब तुफ़ैल नबिये रऊफ़ो रहीम अलैहिस्सलातो वत्तसलीम हमें अपनी और अपने महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की सच्ची मोहब्बत अता फ़रमाए और मस्लके हक़ ''मस्लके आला हज़रत'' पर क़ायम व दायम रखे। सभी बद मज़हबों खुसूसन वहाबियों, देवबन्दियों से दूर व नुफ़ूर रखे और ईमान पर खात्मा अता फ़रमाए और हज़रत मौलाना अनवार अहमद साहब क़ादरी रज़वी के इस रिसाले को मक़बूले अनाम बनाए। आमीन।

(फ़क़त)

मोहम्मद कुदरतुल्लाह रज़वी गु फ़े र लहू
शैख़ुल हदीस दारुल उलूम अहले सुन्नत तनवीरुल इस्लाम
अमर डोभा ज़िला सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)
1 शाबानुल मोअज़्ज़म सन् 1432 हि.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى
اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ
الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيْ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْخَواجَةُ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيْ وَشَهِيْدِ
مُحَبَّتِهِ الْاِمَامِ اَحْمَدُ رَضَا الْفَاضِلُ الْبَرِيْلَوِيْ اَجْمَعِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (پ۱۱، رکوع۴)
صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْاَمِيْنُ الْكَرِيْمُ وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ
لَمِنَ الشّٰاهِدِيْنَ وَالشّٰاكِرِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.

क्यूँ रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले
डाल दी क़ल्ब में अज़मते मुस्तफ़ा
सैय्यिदी आला हज़रत पे लाखों सलाम

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने पूरी ज़िन्दगी अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की इताअत व फ़रमाँ बरदारी में गुज़ारी। आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम पर जान व दिल से फ़िदा व कुरबान थे।

फ़रमाते हैं या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलिका व आलिका व सल्लम :

दहन में ज़ुबाँ तुम्हारे लिये, बदन में है जाँ तुम्हारे लिये
हम आए यहाँ तुम्हारे लिये, उठें भी वहाँ तुम्हारे लिये
(हदाइक़े बख़्शिश)

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो शरीअत व सुन्नत के ज़बरदस्त आलिम थे। सहाबए किराम और अहले बैते इज़ाम के आशिक़े सादिक़ और वफ़ादार ग़ुलाम थे।

फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

(हदाइक़े बख़्शिश)

और फ़रमाते हैं :

उनके मौला की उन पर करोरों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश)

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, ख़ुलफ़ाए राशिदीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के सच्चे जाँ निसार और मदह ख़्वाँ थे।

ख़लीफ़ए अव्वल : हज़रत अबू बकर सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शान यूँ बयान फ़रमाते हैं :

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

ख़लीफ़ए दौम : हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की अज़मत का एलान यूँ फ़रमाते हैं :

वह उमर जिसके आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

ख़लीफ़ए सोम : हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मक़ाम व मरतबा को यूँ बयान फ़रमाते हैं :

दुर्रे मन्सूर क़ुरआँ की सिलक बही
ज़ौजे दो नूर इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

ख़लीफ़ए चहारुम : हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो की इज़्ज़त व बुज़ुर्गी का ख़ुत्बा यूँ पढ़ते हैं :

शेरे शमशीर ज़न शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

अहले बैते पाक आले रसूल हज़रत सैयिदा फ़ातेमतुज़्ज़ोहरा, हज़रत सय्यदना इमाम हसन, हज़रत सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन की क़राबत की अज़मत को यूँ उजागर फ़रमाते हैं

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

और फ़रमाते हैं :

और जितने हैं शहज़ादे उस शाह के
उन सब अहले मकानत पे लाखों सलाम

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के नज़दीक चारों अइम्मा बरहक़ हैं मगर तक़लीद व पैरवी सिर्फ़ एक ही इमाम की की जाएगी। आप हज़रत इमामे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के मुक़ल्लिद व पैरोकार थे। अइम्मए इज़ाम की इमामत को यूँ बयान फ़रमाते हैं :

शाफ़ेई, मालिक, अहमद, इमामे हनीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मशरबन क़ादरी हैं, अपने पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शाने ग़ौसियत व क़ादिरियत यूँ बयान फ़रमाते हैं :

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जल्वए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम
जिसकी मिम्बर हुई गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल मोईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शरफ़ो बुज़ुर्गी और रूहानियत व करामत को इस क़दर बयान फ़रमाया है कि ख़्वाजए ख़्वाजगाँ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो के नूरानी आस्ताना, बा बरकत चोखट पर जो दुआ माँगी जाती है वह फ़ौरन कुबूल होती है। उस्ताज़े ज़मन ने यूँ बयान किया है :

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं माँगने वाला तेरा

और किसी ने यूँ कहा है :

ख़्वाजए ख़्वाजगाँ हिन्द के बादशाह
ख़्वाजए दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तसनीफ़ात व तालीफ़ात और आपके गुफ़्तार व किरदार से महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का इश्क़ व मोहब्बत हज़रत अबू बकर की सदाक़त, हज़रत उमर फ़ारूक़ की अदालत, हज़रत उस्माने ग़नी की सख़ावत, हज़रत मौला अली की शुजाअत, हज़रत सैयिदा फ़ातेमतुज़्ज़ोहरा की तहारत, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन की शहादत, हज़रत इमामे आज़म की इमामत, हज़रत पीराने पीर ग़ौसे आज़म दस्तगीर की करामत, हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की विलायत, हज़रत मख़दूम अशरफ़ की अज़मत व शराफ़त और शाहे बरकात की बरकत और तमाम औलिया व उलमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की इज़्ज़त और शरीअत व सुन्नत की हुरमत रोज़े रोशन से ज़्यादा ज़ाहिर व साबित है और आपकी ज़ात अस्लाफ़ की अमानतों की अमानतदार और बुज़ुर्गों की उल्फ़त व मोहब्बत और अदब व ताज़ीम की चलती फिरती तस्वीर और आईनादार है।

सहाबए किराम से आज तक के तमाम बुज़ुर्गों के इस्लाम व ईमान और शरीअत व सुन्नत की अमानत की सियानत व हिफ़ाज़त आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने की।

अगलों ने भी लिखा है बहुत इल्मे दीन पर
जो कुछ है इस सदी में वह तन्हा रज़ा का है

इसलिये नेकों और बुज़ुर्गों के मस्लक को इस दौर में मस्लके आला हज़रत कहा जाता है।

हज़रात ! देवबन्दी, वहाबी, तब्लीग़ी और नदवी वग़ैरह अपने कुफ़्री नज़रियात और बातिल अक़ाइद की बुनियाद पर काफ़िर व मुर्तद हैं मगर वह हज़रात भी अपने आप को हनफ़ी लिखते और कहलवाते हैं जो उनकी किताबों से ज़ाहिर है।

या रसूलल्लाह कहना, हयातुन्नबी मानना, नबी को मुश्किलकुशा, हाजत रवा और हाज़िर व नाज़िर मानना, मीलादे मुस्तफ़ा मनाना, या अली पुकराना, हज़रत इमाम हुसैन की शहादत का ज़िक्र करना, उनके नामे पाक पर खिचड़ा पकाना और सबील लगाना, या ग़ौस अल मदद कहना, या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ कहना और छटी की फ़ातिहा करना, बुज़ुर्गों का उर्स मनाना, औलिया अल्लाह के मज़ारों पर चादर व फूल पैश करना, नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात, फ़राइज़ो वाजिबात वग़ैरह, तीजा और चालीसवां करना इस तरह के नेक व पसन्दीदा रस्म व सुन्नत को अदा करना जो बिदआत व ख़ुरफ़ात से पाक व साफ़ हों उनको अन्जाम देना।

हज़रात ! इसी इस्लाम व ईमान और शरीअत व सुन्नत के मजमूआ को मस्लके आला हज़रत कहा जाता है, इसी को हुज़ूर सैयिदुल उलमा मारेहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान फ़रमाते हैं :

या इलाही मस्लके अहमद रज़ा ख़ाँ ज़िन्दाबाद
हिफ़्ज़े नामूसे रिसालत का जो ज़िम्मेदार है

वहाबी देवबन्दी फ़िरक़े के ख़िलाफ़ शिद्दत और सख़्ती की वजह : हज़रात ! यह बात समझने और याद रखने की है कि बद मज़हब और बद अक़ीदा वहाबी, देवबन्दी और अहले हदीस कहलाने वाले फ़िरक़े के ख़िलाफ़ सुन्नी उलमा का रवैया इस क़दर सख़्त क्यूँ है तो इसके कई वुजूहात हैं जिन्हें ठन्डे दिल से पढ़ने और समझने की ज़रूरत है।

क़ाबिले तवज्जोह ! तो यह है कि जिन कुफ़्रियात और गुमराही की वजह से वहाबी, देवबन्दी और अहले हदीस कहलाने वाले ग़ैर मुक़ल्लिद फ़िरक़े के साथ हमारा बुनियादी इख़्तिलाफ़ है उनका तअल्लुक ईमान और अक़ीदे से है और वह अक़ीदा या तो उनके दिलों में है या उनकी

किताबों में लिखा हुआ है। अब जहाँ तक अमल का तअल्लुक़ है तो अहले हदीस कहलाने वाले फ़िरक़े के कुछ आमाल अलग हैं मगर ईमान और अक़ीदे में अहले हदीस कहलाने वाले और वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी सब एक और बराबर हैं, लेकिन देवबन्दी और तब्लीग़ी लोग तो अपने आप को हनफ़ी बल्कि सुन्नी भी कहते हैं और ज़ाहिर में बिल्कुल सुन्नी मुसलमानों की तरह वह भी नमाज़ वग़ैरह पढ़ते हैं तो उन बद मज़हब और बद अक़ीदा लोगों के कलमा और नमाज़ को देखकर उनके मुतअल्लिक़ अवाम ग़लतफ़हमी में मुब्तला हो जाते हैं। इसी बुनियाद पर अवाम में उन लोगों की पहचान के लिये ऐसी मज़बूत अलामत बताई जाए कि अवामे अहले सुन्नत को कोई दुश्वारी न हो।

आला हज़रत सुन्नियत की अलामत हैं : उलमाए हक़ के नज़दीक आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मोहब्बत रखना सुन्नियत की अलामत है और आपसे हसद व बुग़्ज़ रखना बद्दीन व गुमराह होने की पहचान है।

हज़रत मौलाना क़ादिर बख़्श साहब सहसरामी रहमतुल्लाहे तआला अलैह एक बा अमल आलिम और ज़बरदस्त बुज़ुर्ग थे। एक शख़्स ने पूछा कि हज़रत ! सुन्नी और वहाबी की क्या पहचान है ? ऐसी पहचान बताइये कि जिसके ज़रीए हम लोग भी ब आसानी सुन्नी और वहाबी को पहचान सकें ।

हज़रत मौलाना सहसरामी रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने फ़रमाया कि एक ऐसा आसान और उम्दा व खरा क़ायदा आप लोगों को बता देता हूँ कि उससे अच्छा मिलना मुश्किल है। आप लोग जब किसी शख़्स के बारे में मालूम करना चाहें कि सुन्नी है या वहाबी ! तो उसके सामने आला हज़रत शाह अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का तज़्किरा छेड़ दीजिये और उसके चेहरे को बग़ौर देखिये। अगर उसके चेहरे पर बशाशत और ख़ुशी के आसार दिखाई पड़ें तो समझ लीजिये कि वह शख़्स सुन्नी है और अगर उसके चेहरे पर पज़्मुरदगी और कदूरत देखिये तो समझ जाइये कि वह शख़्स वहाबी है और अगर वहाबी नहीं जब भी उसमें किसी क़िस्म की बे दीनी और गुमराही ज़रूर है। (सवानेह आला हज़रत, स. 113)

आला हज़रत से बुग़्ज़ रखने वाला वहाबी नहीं तो गुमराह ज़रूर है : शाने बरकातियत [illegible] आला हज़रत, हज़रत अल्लामा सय्यद शाह मुस्तफ़ा हैदर हसन, हुज़ूर हसन मियाँ मारहरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का फ़रमूदा कलमा मैंने ख़ुद सुना कि जो आला हज़रत का नहीं वह मेरा मुरीद नहीं और जो मेरा मुरीद है उस पर लाज़िम है कि वह आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का चाहने वाला हो और फ़रमाया कि जो शख़्स आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से बुग़्ज़ो इनाद रखता है अगर उस शख़्स में तलाश किया जाए या तो वह शख़्स वहाबी, बद अक़ीदा होगा या उस शख़्स में कोई न कोई ज़लालत व गुमराही ज़रूर होगी। ज़ाल व गुमराह लोग भी आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से बुग़्ज़ो इनाद रखते हैं।

और फ़रमाते हैं :

सुन्नियत की आबरू दम से तेरे	अब भी क़ाइम है शहा अहमद रज़ा
नअ़रए शेरा नाज़ब गूंजा तेरा	क़ल्बे नज्दी फट गया अहमद रज़ा
तेरी उलफ़तमेरे मुर्शिद ने मुझे	दी है घुट्टी में पिला अहमद रज़ा
याद करता है तुझे तेरा हसन	उसके हक़ में कर दुआ अहमद रज़ा

सुन्नियत की जाँच के लिये आला हज़रत का नाम लीजिये : शहज़ादए हुज़ूर सय्येदुल उलमा हज़रत सय्यद शाह आले रसूल हसनैन मियाँ नज़मी मारेहरवी दामाज़िल्लहुल आली फ़रमाते हैं :

सोने चाँदी को जाँचने के लिये संगे पारस से काम ले लीजिये
और वहाबी को जानने के लिये आला हज़रत का नाम ले लीजिये

ईमान वालों का दुश्मन कौन ? आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की ज़ात अलहुब्बो फ़िल्लाह वल बुग़्ज़ो फ़िल्लाह की ज़िन्दा तसवीर थी। अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से मोहब्बत रखने वाले को अपना अज़ीज़ व दोस्त समझते और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के

दुश्मन को अपना दुश्मन जानते, अपने मुख़ालिफ़ से कभी सख़्ती से पेश न आए, ख़ुश अख़्लाक़ी का यह आलम था कि जिससे एक बार कलाम फ़रमाया उसके दिल को गिरवीदा बना लिया, कभी दुश्मन से भी सख़्त कलामी न फ़रमाई, हमेशा हिल्म व बुर्द बारी से काम लिया लेकिन दीन के दुश्मन से कभी नर्मी न बर्ती। चुनाँचे एक मरतबा हज़रत नन्हे मियाँ मौलाना मुहम्मद रज़ा ने अस्र के बाद आपकी ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हैदराबाद से एक राफ़ज़ी सिर्फ़ आपकी ज़ियारत के लिये आया है और वह अभी हाज़िरे ख़िदमत होगा। तालीफ़े क़ल्ब के लिये उससे बात चीत कर लीजियेगा। दौराने गुफ़्तुगू में वह राफ़ज़ी भी आ गया। हाज़िरीने मजलसि का बयान है कि आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उस की तरफ़ बिल्कुल मुतवज्ज़ह न हुए, यहाँ तक कि नन्हें मियाँ साहब ने उसको कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, वह बैठ गया। आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के गुफ़्तुगू न फ़रमाने से उसको भी कुछ बोलने की जुरअत व हिम्मत न हुई, थोड़ी देर बैठकर वह राफ़ज़ी चला गया। उसके जाने के बाद नन्हें मियाँ ने आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो को सुनाते हुए कहा कि इतनी दूर से वह सिर्फ़ मुलाक़ात के लिये आया था, अख़्लाक़न तवज्ज़ोह फ़रमा लेने में क्या हरज था। हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने जलाल की हालत में इरशाद फ़रमाया कि मेरे अकाबिर बुज़ुर्गों ने मुझे यही अख़्लाक़ बताया है। (सवानेह आला हज़रत, स. 114)

बद मज़हबों से मेलजोल रखना अख़्लाक़ नहीं है

हज़रात ! आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने अमल से बता दिया और समझा दिया कि अखलाक़ क्या है। बद मज़हबों से मेल जोल रखना अख़लाक़ नहीं है। आज के दौर में कुछ लोग सुन्नी, रज़वी बनते और कहलाते हैं, आला हज़रत-आला हज़रत कहते नज़र आते हैं, मसलके आला हज़रत ज़िन्दाबाद का नारा लगाते हैं और उनका हाल यह है कि बद अक़ीदों, बद मज़हबों के साथ खाते पीते और उनके साथ बैठते उठते हैं। उनके यहाँ

शादी ब्याह करते हैं, वह मर जाएं तो उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हैं। मआज़ल्लाहे तआला और फिर यह कहते हैं कि हमारा अख़लाक़ है। आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उस बद अक़ीदा, बद मज़हब राफ़ज़ी से बात तक न की और फ़रमाया कि हमारे बुजुर्गों ने हम को यही अख़लाक़ बताया और सिखाया है, साफ़ तौर से ज़ाहिर और साबित हो गया कि बद मज़हब, वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, राफ़ज़ी से दूर रहना, बात तक न करना यही इस्लाम व सुन्नत वाला अख़लाक़ है।

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
गैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

हज़रात ! आपने आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का किरदार व अमल मुलाहज़ा फ़रमा लिया कि बद मज़हब के साथ एक मोमिन व मुसलमान का सुलूक व बरताव किस तरह का होना चाहिये। आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने सहाबये किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अजमईन से यह सब कुछ सीखा था। आला हज़रत बयान फ़रमाते हैं : मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म ने बद अक़ीदा को खाने से उठा कर भगा दिया : मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो मस्जिदे नबवी शरीफ़ से तशरीफ़ ला रहे हैं, राह में एक मुसाफ़िर मिलता है और वह सवाल करता है कि मैं भूका हूँ। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो उस मुसाफ़िर को अपने साथ ले लेते हैं, वह मुसाफ़िर आपके साथ काशाना-ए-अक़दस तक पहुँचा है, अमीरुल मोमिनीन ख़ादिम को खाना लाने का हुक्म देते हैं, ख़ादिम खाना लाता है और दस्तरख़्वान बिछा कर सामने रखता है। खाना खाते वक़्त उस मुसाफ़िर से बद अक़ीदगी और बद मज़हबी के कुछ अलफ़ाज़ ज़बान

निकलते हैं, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ख़ादिम को हुक्म देते हैं कि खाना उसके सामने से फ़ौरन उठाओ और उसका कान पकड़ कर घर से बाहर कर दो। ख़ादिम उसी दम हुक्म बजा लाता है यानी उस बद मज़हब मुसाफ़िर को खाना नहीं खाने दिया, खाने से उसको उठाकर बाहर कर दिया। (सवानेह आला हज़रत, स. 115)

हज़रात ! कौन है ? जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के इस अमल को बुराई और बद अख़्लाक़ी कहे, उसके ईमान का तोता उड़ जाने का ख़तरा है। साबित हुआ कि बद मज़हब और बदअक़ीदा के साथ सख़्ती से पेश आना यही अख़्लाक़ है और इस तरह का प्यारा अख़्लाक़ हम को मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से नसीब हुआ है।

ऐसे सच्चे अक़ीदे और पुख़्ता ईमान को कुछ लोग कह देते हैं कि इस्लाम में शिद्दत और सख़्ती का मिज़ाज आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी ने दिया और फैलाया है तो मैं अर्ज़ करना चाहूँगा कि हिम्मत है तो कह दो कि मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बरैलवी ख़याल व अक़ीदे के हामिल थे। अल्लाह तआला ऐसी ख़ुराफ़ात व फ़ुज़ूलियात से हम को बचाए।

हाँ यह ज़रूर है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सिद्दीक़ी, फ़ारूक़ी, उस्मानी, अलवी, हसनी, हुसैनी, हनफ़ी, क़ादरी, चिश्ती, बरकाती मिज़ाज व अक़ीदे के हामिल और उसके आमिल थे। इसी लिये सिद्दीक़ी फ़ारूक़ी, उस्मानी, हसनी, हुसैनी, हनफ़ी, क़ादरी, चिश्ती मसलक को इस दौर में मसलके आला हज़रत कहा जाता है।

या इलाही मसलके अहमद रज़ा ख़ाँ ज़िन्दा बाद
हिफ़्ज़े नामू से रिसालत का जो ज़िम्मेदार है

रसूलल्लाह ने मुनाफ़िक़ को मस्जिद से निकाला : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ से नाम ले ले कर मुनाफ़िक़ों को निकलवाया –

اُخْرُجْ یَا فُلَانُ فَاِنَّکَ مُنَافِقٌ

तर्जमा : ऐ फ़लाँ मस्जिद से निकल जा इस लिये कि तू मुनाफ़िक है

हज़रात ! बहुत से टी.टी.एस सुन्नी मुसलमान कहलाने वाले बद अक़ीदों के तरफ़दार सुलह कुल्ली हज़रात जो कहते हैं कि मुस्जिद खुदा का घर है, हर किसी को मस्जिद में नमाज़ पढने का हक है, मस्जिद से किसी को निकालने का हुक्म हम को नहीं है तो ऐसे सुलह कुल्ली मुसलमानों से सवाल है कि ख़ुद रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने मुनाफ़िकों को मस्जिदे नबवी शरीफ़ से क्यों निकाला। तो मालूम हुआ कि मस्जिद से बद मजहब, बद अकीदा शख्स को निकालना सुन्नत है

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये

गैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

आला हज़रत ने हदीस से बद मज़हब की पहचान बताई महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं -

یَکُوْنُ فِیْ اٰخِرِ اُمَّتِیْ اُنَاسٌ یُحَدِّثُوْنَکُمْ بِمَا لَمْ تَسْمَعُوْا اَنْتُمْ وَلَا اٰبَائُکُمْ فَاِیَّاکُمْ وَاِیَّاھُمْ

तर्जमा : (ऐ मुसलमानो !) मेरी उम्मत के आखिर में कुछ (बद मज़हब) लोग पैदा होंगे जो तुम से वह बातें बयान करेंगे जिन को न तुम ने सुना और न तुम्हारे बाप दादा ने सुना है तो (जब ऐसे बद मज़हब ज़ाहिर हो जाएं तो) तुम लोग उन से बचते रहना और अपने को उनसे दूर रखना।

(मुस्लिम शरीफ़ ...)

दूसरी हदीस शरीफ़ में हमारे प्यारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं -

يَكُوْنُ فِىْ اٰخِرِ الزَّمَانِ دَجَّالُوْنَ كَذَّابُوْنَ يَاْتُوْنَكُمْ مِنَ الْاَحَادِيْثِ بِمَا لَمْ تَسْمَعُوْا اَنْتُمْ وَلَا اٰبَائُكُمْ فَاِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْنَكُمْ وَلَا يَفْتِنُوْنَكُمْ

तर्जमा : यानी आख़िर ज़माने में बहुत बड़े मक्कार व झूटे लोग पैदा होंगे वह तुम्हारे सामने ऐसी मनघड़त हदीसें बयान करेंगे जिनको न तुमने सुना, और न तुम्हारे बाप दादा ने सुना (जब) ऐसे मक्कार झूटे लोग चाहे वह लोग मौलवी कहलाते हों या सूफ़ी या मुल्ला बनकर ज़ाहिर हों तो तुम ऐ मुसलमानो ! उनसे अलग रहना, अपने से उनको अलग रखना, क़हीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें हक़ व सच से बहका दें। कहीं ऐसा न हो वह तुम्हें बद मज़हबी और फ़ितने में मुब्तला कर दें। (मुस्लिम शरीफ़, स. 10)

हज़रात ! इन दोनों हदीसों से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि खुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व वसल्लम ने अपने गुलामों ईमान वालों को बद मज़हबों, बद अक़ीदों से दूर रहने और उनको अपने से दूर रखने की हिदायत फ़रमाई है लिहाज़ा हर मोमिन व मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि मुशफ़िक़ व महरबान नबी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इरशाद व फ़रमान पर अमल करते हुए अपने दीन व ईमान की नेअ्मत व दौलत के ख़ज़ाने की हिफ़ाज़त व सियानत की फ़िक्र में लग जाएं और यह जब ही मुमकिन है तमाम बद अक़ीदों से तिनका तोड़ अलग थलग रहा जाए।

और यह भी साबित हो गया कि बद मज़हबों, बद दीनों से दूर रहकर दीन व ईमान की हिफ़ाज़त का सबक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ही ने सिर्फ़ नहीं दिया है बल्कि ख़ुद महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तालीम कर्दा दर्स व सबक़ है। आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की सुन्नत को ज़िन्दा किया है। इसी सबब से महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की हदीस व सुन्नत के गुलदस्ते को इस दौर में मसलके आला हज़रत कहा जाता है।

या इलाही मसलके अहमद रज़ा ख़ाँ ज़िन्दा बाद
हिफ़्ज़े नामूसे रिसालत का जो ज़िम्मेदार है

बद मज़हब की ताज़ीम करना इस्लाम को ढाना है

हदीस शरीफ़ : महबूबे दावर शफ़ीए महशर, हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ وَقَّرَ صَاحِبَ بِدْعَةٍ فَقَدْ اَعَانَ عَلٰى هَدْمِ الْاِسْلَام

तर्जमा : जिसने किसी बद मज़हब की ताज़ीम व तौक़ीर की उसने इस्लाम ढाने पर मदद दी। (मिश्कात शरीफ, स. 31)

हज़रात ! सुन्नी मुसलमान कहलाने वालो ! ज़रा सोचो ! बद मज़हब, बद अक़ीदा को अपने घर बुलाना, अपनी शादियों में दावत देना, उसकी इज़्ज़त के लिये उस बद अक़ीदा के आने पर खड़ा हो जाना, ख़ुश आमदीद कहना, उसको खाना खिलाना और उस बद अक़ीदा शख़्स के घर जाना उसकी शादी में शिरकत करना, उसको फूलों का गुलदस्ता पेश करना, तोहफ़ा वग़ैरह देना, क्या बद मज़हब, बद अक़ीदा की ताज़ीम व तौक़ीर नहीं है। बेशक यक़ीनन ताज़ीम व तौक़ीर है और हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित है कि बद मज़हब, बद अक़ीदा की ताज़ीम व इज़्ज़त करना दीन व इस्लाम को ढा देना है।

मौत बरहक़ है क़ब्र में जाना है

याद रखो ! मौत बरहक़ है, क़ब्र में जाना है, क़ियामत की होलनाकियों का सामना करना है तो सोचो ! और ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र कर लो कि तुम किस की इज़्ज़त व ताज़ीम कर रहे हो जो तुम्हारे मुशफ़िक़ व मुहरबान नबी की इज़्ज़त व ताज़ीम को शिर्क व बिदअत कहता है, क़ब्र में रहमत का सामान दोस्त व अहबाब और रिश्ते दार न होंगे बल्कि क़ब्र का उजाला, क़ब्र की रहमत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम होंगे, जो हदीस शरीफ़ से साबित और ज़ाहिर है।

सरकार आला हज़रत फ़रमाते हैं :

क़ब्र में लहराऐंगे ता हश्र चश्मे नूर के
जलवा फ़रमा होगी जब तलअत रसूलुल्लाह की

और क़ियामत के दिन नफ़्सी नफ़्सी के आलम में शफ़ाअते कुबरा का ज़र्रीं ताज सर पर सजा ये शफ़ीए महशर बनकर हम गुनाह गारों की शफ़ाअत व बख़्शिश के लिये बेइज़्निल्लाहे तआला हमारे रहीम व करीम आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम होंगे आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ख़ुद रोऐंगे और हम को हंसाऐंगे।

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं

पेशे हक़ मुज़्दा शफ़ाअत का सुनाते जाऐंगे
आप रोते जाऐंगे हम को हंसाते जाऐंगे

क़ियामत के दिन जब हमारे जुर्मों और गुनाहों के दफ़्तर खुलेंगे और उस वक़्त हमारा कोई मोईन व मदद गार न होगा तो आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हमारे गुनाहों और जुर्मों की परदा पोशी करेंगे और छुपा ऐंगे।

वुसअतें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाऐंगे और वह छुपाते जाऐंगे

रसूलुल्लाह क़ब्र व हश्र में काम आऐंगे

हज़रात ! इस लिये अभी वक़्त है कि हम फ़ैसला कर लें कि हम किसके दुश्मन की इज़्ज़त व ताज़ीम करते हैं, किसके मुख़ालिफ़ से रिश्ता-ए-मुहब्बत जोड़ते हैं, जो आक़ाए करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम क़ब्र व हश्र में काम आने वाले हैं इस लिये आज ही हम तौबह व इस्तिग़फ़ार कर के अपने ईमान व अक़ीदे को मज़बूत बना लें और अपने मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की ख़िदमते आलिया में वादा कर लें कि हम उस शख़्स से मेल व मुलाक़ात रखेंगे जो हमारे आक़ाए नेअ़मत व दौलत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का आशिक़ व गुलाम और वफ़ादार है और

उस शख़्स से मेल व मुलाक़ात नहीं रखेंगे जो हमारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मुख़ालिफ़ व दुश्मन है। मैं वुसूके कामिल और मुकम्मल यक़ीन व इज़आन के साथ आप को बताता हूँ कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रहीम हैं, करीम हैं बल्कि सरापा रहमो करम हैं, अपने उम्मती और ग़ुलाम से बहुत ही शफ़क़त व महब्बत फ़रमाते हैं, मुआफ़ी का परवाना अता फ़रमा कर अपना बना लेंगे, क़ब्र में भी निभाऐंगे और हश्र में भी इज़्ज़त व लाज बचाऐंगे। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं–

खड़े हैं मुनकर नकीर सर पर, न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आकर मेरे पयम्बर, कि सख़्त मुश्किल जवाब में है
खुदाए क़ह्हार है ग़ज़ब पर, खुले हैं बदकारियों के दफ़्तर
बचा लो आकर शफ़ीए महशर, तुम्हारा बन्दा अज़ाब में है

हदीस शरीफ़ : ऐनी शरह बुख़ारी जि. 11, स. 140 पर है

كَانَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ عَمْرٍو وَ اِبْنُ عَبَّاسٍ وَ اِبْنُ اَبِیْ اَوْفٰی وَجَابِرٌ وَ اَنَسُ بْنُ مَالِكٍ
وَاَبُوْ هُرَيْرَةَ وَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ وَ اَقْرَانُهُمْ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ يُوْصُوْنَ اِلٰی
اَخْلَافِهِمْ بِاَنْ لَّا يُسَلِّمَ عَلَى الْقَدْرِيَّةِ وَلَا يَعُوْدُوْهُمْ وَلَا يُصَلُّوْا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُصَلُّوْا عَلَيْهِمْ اِذَا مَاتُوْا

तर्जमा : अब्दुल्लाह बिन अम्र, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, इब्ने अबी औफ़ा, जाबिर, अनस बिन मालिक, व अबू हुरैरह व उक़बह बिन आमिर वग़ैरह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम (अपने ज़माने के मुसलमान कहलाने वाले क़दरी बद मज़हबों के बारे में) अपनी नस्लों यानी औलादों को सख़्त ताकीद फ़रमाया करते थे कि उन (नाम के मुसलमान कहलाने वाले बद मज़हब) लोगों को सलाम न करना और उनकी बीमार पुर्सी को न जाना, उनके पीछे नमाज़ न पढ़ना और वह मर जाएं तो उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना।

हज़रात ! ख़ूब ग़ौर से इस हदीस शरीफ़ को सुन लो और याद कर लो!

कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम अपने ज़माने के मुसलमान कहलाने वाले बद मज़हब और बद अक़ीदा लोगों से दूर और अलग रहने के लिये अपनी औलाद को हिदायत देते थे। और नसीहत करते थे कि उन बद अक़ीदों से हर हाल में दूर रहना, उन के पीछे नमाज़ न पढ़ना और वह मर जाएं तो उनकी नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना।

तो मालूम हुआ कि बदमज़हबों और बद अक़ीदों से हर हाल में अलग और दूर रहना सहाबा-ए-किराम की सुन्नत व आदत है और इसी तालीम को इस दौर में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने आम किया और बताया कि -

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

हज़रात ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम ने अपने दौर में जो तालीमात अता की थीं सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की उन तालीमात को चौदहवीं सदी में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने ज़िन्दा किया इसी लिये मसलके सहाबा को इस दौर में मसलके आला हज़रत कहा जाता है।

शेरे ख़ुदा मौला अली बद अक़ीदों पर किस क़दर सख़्त थे : मेरे आक़ा इमाम हसन और इमाम हुसैन के वालिदे माजिद शेरे ख़ुदा हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम ने अपने दौर के मुसलमान कहलाने वाले बद मज़हबों, बद अक़ीदों, ख़ारजियों की नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात और तिलावते कुरआने मजीद का पास व लिहाज़ न फ़रमाया, उनके साथ याराना व दोस्ताना तअल्लुक़ न रखा, उनको अपना दीनी और इस्लामी भाई क़रार न दिया, उनसे मेल जोल रवा न रखा बल्कि मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने उनकी बद मज़हबी और बद अक़ीदगी की बुनियाद पर उन से जिहाद करके पाँच हज़ार

ख़ारजी ग़ैर मुक़ल्लिदों को क़त्ल किया। (सवानेह आला हज़रत, स. 117)

हज़रात ! हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से ज़्यादा कुरआनो हदीस और शरीअत व सुन्नत को जानने वाला और अख़लाक़ और मुरव्वत को समझने वाला और कौन हो सकता है ? मगर आपने बद मज़हब और बद अक़ीदा शख़्स के साथ शिद्दत व सख़्ती न की जाए इस अम्र को शरीअत व सुन्नत और अख़लाक़ न जाना और न ही कहा बल्कि बद अक़ीदों और बद मज़हबों के साथ शिद्दत व सख़्ती फ़रमाई, और उनको क़त्ल किया। मालूम हुआ कि बद मज़हब और बद अक़ीदा लोगों के साथ शिद्दत और सख़्ती करना हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सुन्नत है। चौदहवीं सदी में आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की राह पर चलते हुए उनकी सुन्नत को ज़िन्दा किया।

इसी लिये मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की विलायत व रूहानियत और किरदार व अमल को इस दौर में मसलके आला हज़रत कहा जाता है।

ताबईने बद मज़हबों से कुरआनो हदीस सुनना पसन्द नहीं किया

हदीस शरीफ़ : यानी जलीलुश्शान ताबई हज़रत इमाम मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की मजलिस में दो बद मज़हबों ने आकर अर्ज़ की, हम आपके सामने एक हदीस बयान करना चाहते हैं। हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि मैं तुम से (हदीस शरीफ़) सुनने के लिये तैयार नहीं हूँ। उन दोनों (बद अक़ीदों) ने कहा कि अगर इजाज़त हो तो हम कुरआन शरीफ़ की कोई आयत पढ़ें ? जलीलुल क़द्र ताबई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया मैं तुम से कुरआन शरीफ़ भी नहीं सुनना चाहता और फ़रमाया कि तुम लोग मेरे पास से चले जाओ या मैं यहाँ से चला जाता हूँ। तब वह दोनों बद अक़ीदे उठ कर चले गए। फिर हाज़िरीन में से किसी ने कहा कि हज़रत ! अगर वह

बद अक़ीदा कुरआने मजीद की कोई आयत पढ़ता तो सुनने में आपका क्या बिगड़ जाता ? मशहूर ताबई हज़रत मुहम्मद बिन सीरीन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया कि मुझे ख़ौफ़ हुआ कि वह बद अक़ीदा कुरआन शरीफ़ की आयत पढ़कर उसके मअ़ना में कुछ रद्दो बदल कर देता और वही ग़लत मअ़ना मेरे दिल में बैठ जाता (और मआज़ल्लाहे तआला मेरा अक़ीदा बिगड़ जाता और ईमान ख़राब हो जाता, इस लिये मैंने उस बद अक़ीदा से कुरआने मजीद और हदीस शरीफ़ सुनना पसन्द नहीं किया)

(दार्मी शरीफ़ बहवाला सवानेह आला हज़रत, स. 117)

बद मज़हब से आधा लफ़्ज़ भी सुनना पसन्द न किया

हदीस शरीफ़ : यानी एक बद मज़हब शख़्स ने हज़रत अय्यूब सख़्तियानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से कहा कि मैं आप से एक लफ़्ज़ के मुतअल्लिक़ कुछ पूछना चाहता हूँ। आप फ़ौरन मुंह फेर कर चल पड़े और उंगली से इशारा करते हुए फ़रमाया कि मैं तुम्हारा आधा लफ़्ज़ भी सुनना पसन्द नहीं करता। (बहवाला सवानेह आला हज़रत, स. 118)

हदीस शरीफ़ : यानी एक बद मज़हब शख़्स ने हज़रत सय्यदना सईद बिन जबीर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से कोई बात पूछी, आपने कोई जवाब न दिया। फिर किसी ने आपसे ख़ामोश रहने का सबब मालूम किया तो आपने फ़रमाया यह आदमी मिन्हुम यानी बद मज़हब और बदअक़ीदा है (इस लिये मैं ख़ामोश रहा कि उससे कोई बात न करूं)

(दार्मी शरीफ़ बहवाला सवानेह आला हज़रत, स. 118)

हज़रात ! सहाबा-ए-किराम और ताबेईने इज़ाम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम किस क़दर बद अक़ीदा और बद मज़हब शख़्स से कुरआने मजीद और हदीस शरीफ़ सुनना तो दर किनार उससे आधा लफ़्ज़ भी सुनना पसन्द नहीं करते थे और आज कल कुछ लोग मज़बूत सुन्नी बनने वाले बद अक़ीदों की किताब पढ़ते हैं और बद अक़ीदों की तक़रीरें सुनते हैं और बद अक़ीदों और बद मज़हबों की मिटिंगों में शरीक होते हैं और यह कहते नज़र आते हैं कि हमारा ईमान व अक़ीदा बहुत मज़बूत है किसी की

तक़रीर और सोहबत का असर मेरे ईमान व अक़ीदे को ख़राब नहीं कर सकता तो उन लोगों को समझना चाहिये कि सहाबा-ए-किराम और ताबेईने इज़ाम के ईमान व अक़ीदे से ज़्यादा तुम्हारा ईमान व अक़ीदा मज़बूत नहीं हो सकता। ऐसे बहके और बिगड़े हुए सुन्नी मुसलमान कहलाने वाले लोगों को सहाबा-ए-किराम और ताबेईने इज़ाम और बुज़ुर्गाने दीन के क़ौल व अमल से दर्से इबरत हासिल करना चाहिये और अपने ईमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त व सियानत की बहुत ही ज़्यादा फ़िक्र करना चाहिये, इस लिये कि ईमान पर ख़ातमा ही निजात व बख़्शिश का सबब है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले
तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले

हुज़ूर ग़ौसे पाक ने लिखा कि

बद मज़हब रास्ते में दिखे तो रास्ता बदल दो

हम क़ादरियों के क़ब्र का उजाला, क़ियामत का सहारा, हमारे पीर पीराने पीर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो गुनयतुत तालिबीन शरीफ़ में लिखते हैं कि -

قَالَ فُضَيْلُ بْنُ عَيَاضٍ وَ اِذَا رَأَيْتَ مُبْتَدِعًا فِىْ طَرِيْقٍ فَخُذْ طَرِيْقًا اٰخَرَ

तर्जमा : फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया : यानी जब तुम किसी बद मज़हब और बद अक़ीदा शख़्स को रास्ते में आता देखो तो तुम उस रास्ते को छोड़कर दूसरी राह पर हो जाओ।

(सवानेह आला हज़रत, स. 118)

हज़रात! हदीस व सुन्नत से और सहाबा-ए-किराम व ताबईने इज़ाम और बुज़ुर्गाने दीन के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि हमारे अस्लाफ़ बुज़ुर्गाने दीन ने बद मज़हबों और बद

अक़ीदों से किस क़दर नफ़रत दिलाई है और उनसे दूर रहने की इतनी सख़्त हिदायत फ़रमाई है कि पीरों के पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तो यहाँ तक लिखते हैं कि कोई बद अक़ीदा शख़्स रास्ते में आता दिखाई दे तो उस रास्ते को छोड़कर दूसरे रास्ते पर चले जाना चाहिये। जिनको ईमान व अक़ीदा प्यारा था उन्होंने अपने ईमान व अक़ीदे की हिफ़ाज़त व सियानत की ख़ातिर बद अक़ीदों और बद मज़हबों से मेल जोल को किसी हाल में भी बरदाश्त नहीं किया और सचे ईमान और पुख़्ता अक़ीदे के साथ इस दुनिया से तशरीफ़ ले गए। अब जो लोग अपने आप को टी.टी.एस यानी पक्का सुन्नी होने का दम भरते हैं और बद अक़ीदों और बद मज़्ज़हबों से दोस्ताना और याराना तअल्लुक़ रखते हैं, मरने के बाद मालूम हो जाएगा कि कितने घाटे और नुक़सान किये। मगर वहाँ अफ़सोस करने से कुछ हासिल न होगा। इस लिये आज ही इस दुनिया में तमाम कोशिशें और तमाम तदबीरें ईमान व अक़ीदे की बक़ा के लिये इख़्तियार कर लेना चाहिये ताकि इस दुनिया से ईमान के साथ बा मुराद जाएं।

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रख वाली है

ऐ ईमान वालो ! हमारे ग़ैबदां रसूल आक़ा-ए-कायनात सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने चौदह सौ साल पहले बद मज़हबी और इब्लीसी जमाअत के शर व फ़साद और उनके फ़ितनों से बा ख़बर और आगाह फ़रमा दिया था और इसी तरह नेजात पाने वाले जन्नती जमाअत के बारे में भी मुत्तलअ़ कर दिया था।

एक जन्नती बहत्तर (72) जहन्नमी

मुलाहज़ा फ़रमाइये :

وَ اِنَّ بَنِیْ اِسْرَائِیْلَ قَدْ تَفَرَّقَتْ عَلٰی ثِنْتَیْنِ وَ سَبْعِیْنَ مِلَّةً وَّ سَتَفْتَرِقُ اُمَّتِیْ عَلٰی ثَلٰثٍ وَّ سَبْعِیْنَ مِلَّةً كُلُّهُمْ فِی النَّارِ اِلَّا مِلَّةً وَّاحِدَةً.

तर्जमा : बनी इस्राईल बहत्तर फ़िर्क़ों में बट गए थे और मेरी उम्मत में तिहत्तर फ़िर्क़े होंगे, एक जमाअत के अलावा सब के सब यानी बहत्तर फ़िर्क़े जहन्नमी होंगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि.2, स. 93, मिश्कात शरीफ़)

तो सहबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम वह एक जमाअत जो नजात पाने वाली होगी (यानी जन्नत में जाने वाली होगी) उसकी क्या पहचान होगी तो सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

जन्नती फ़िर्क़े की पहचान

مَا اَنَا عَلَيْهِ وَ اَصْحَابِىْ

तर्जमा : यानी जो मेरे सहाबा के तरीक़े और सुन्नत पर होंगे वही लोग नजात पाने वाले यानी जन्नत में जाने वाले होंगे।

सुन्नी भाईयो ! यह जानना ज़रूरी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तरीक़ा और सुन्नत और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम का तरीक़ा और सुन्नत कौन सा है, तो याद रखिये कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के बहुत से तरीक़े और सुन्नत पर अमल होगा और बहुत से तरीक़े पर अमल करने की किसी में ताक़त व कुव्वत ही नहीं।

मिसाल के तौर पर : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का कलमा - لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ

यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई माबूद नहीं। बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ।

और हम उम्मती का कलिमा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

यानी अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। मोहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और अगर कोई शख़्स ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की बजाए ला इलाहा इल्लल्लाहु इन्नी रसूलुल्लाह पढ़ेगा तो ईमान व इस्लाम से ख़ारिज होकर काफ़िर हो जाएगा तो साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि नबी

सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के बाज तरीके पर उम्मती अमल नहीं कर सकता।

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का मग़रिब से सूरज का पलटाना, चाँद के दो टुकड़े फ़रमाना ! दरख़्तों को उन की जगह से अपने पास बुला लेना, कन्करों से कलमा पढ़वाना, अपनी उंगलियों की घाइयों से पानी का चश्मा बहाना, सोपे विसाल यानी रात व दिन मुसलसल रोज़ा रखना, शबे मेअराज पल भर में ला मकां जाकर खुदाए तआला से मुलाकात करके वापस आ जाना, कि ज़न्जीर भी हिलती रही और बिस्तर भी रहा गर्म ! वग़ैरह तरीके पर कोई भी उम्मती अमल नहीं कर सकता।

और हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के बहुत से तरीक़ा व सुन्नत पर उम्मती अमल कर सकते हैं और करते हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, तिजारत, शादी ब्याह वग़ैरह तरीक़ा और सुन्नत पर उम्मती अमल करते हैं।

इसी लिये हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मेरे तरीका और सुन्नत पर अमल करने के साथ साथ मेरे सहाबा के तरीक़ा और सुन्नत पर अमल करने वाला नजात पाएगा और जन्नत का हक़दार होगा।

सुन्नी मुसलमानो ! ग़ोरो फ़िक्र से सुनो ! और याद रखो कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम का तरीक़ा और सुन्नत क्या है।

सहाबा-ए-किराम का तरीक़ा

अहादीसे तैय्यिबा मुलाहज़ा फ़रमाइये :

(1) हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से इश्क़ो महब्बत करना जैसे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के वुज़ू का पानी ज़मीन पर न गिरने देना बल्कि वुज़ू के पानी को लेकर चेहरे पर मल लेना। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब जि. 2, स. 192)

(2) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के

पसीना तैय्यिबा को इत्र के तौर पर इस्तिमाल करना।

(बुखारी व मुस्लिम, मिश्कात शरीफ, स. 517)

(3) हज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पेरहन शरीफ़, जुब्बा मुबारका को तबर्रुक के तौर पर रखना और फैज़ व बरकत हासिल करना, पेरहन शरीफ़ को पानी के बरतन में डालकर निकाल लेना और उस पानी को बीमारी में शिफ़ा के लिये इस्तिमाल करना।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 190)

(4) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के मूए मुबारक (बाल शरीफ़) अपने घर में बरकत के लिये रखना।

(बुखारी, स. 39, मुस्लिम, जि. 2, स. 356, मिश्कात शरीफ़, स.232)

(5) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को मुश्किल वक़्त में मदद के लिये या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम कह कर पुकारना। (अल मुस्तदरिक, जि.1, स. 519, बहवाला अनवारुल इन्तिबाह फी हल्ले निदाए या रसूलल्लाह, स. 48)

(6) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा मानना। (अबू दाऊद शरीफ, जि. 1, स. 157, इब्ने माजह, स. 76, मिश्कात, स. 121, अशिअतुल लमआत, जि. 1, स. 576)

(7) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को हर जगह हाज़िर व नाज़िर मानना। (मुस्लिम शरीफ, रूहुल मआनी, स. 48)

(8) यह अकीदा रखना कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम क़रीब और दूर की सदा सुनते है और फ़रियादी की मदद फ़रमाते हैं। (बुखारी, जि.1, स. 184, मुस्तदरिक हाकिम, जि. 1, स. 40, दलाइलुल खैरात खुत्बा)

(9) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का नामे पाक सुन कर अंगूठा चूमना और आँखों से लगाना। (देल्मी, मस्नदुल फिरदौस बहवाला मुनीरुल ऐन फी तकबीलिल अभामैन, स. 12)

(10) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की इत्तिबाअ और महब्बत में नमाज़, रोजा, हज, ज़कात वग़ैरह आमाले सालेहा अदा करना।

हज़रात ! अहादीसे करीमा से साफ़ तौर पर आफ़ताबे निस्फ़ुन्नहार से ज़्यादा रोशन और साबित हो गया कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम का तरीक़ा और सुन्नत क्या है और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के तरीक़ा और सुन्नत पर अमल करने वाला नजात पाएगा और जन्नत का हक़दार ठहरेगा।

वहाबी, देवबन्दी सहाबा के तरीक़े पर नहीं हैं

ऐ ईमान वालो ! जब सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम का तरीक़ा और सुन्नत रोशन और साबित हो गया तो हक और ईमान के साथ जांचो और परखो कि वहाबी, देवन्बदी, तब्लीग़ी, अहले हदीस कहलाने वाले ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरह सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के तरीक़ा और सुन्नत पर हैं कि नहीं। तो यक़ीनी तौर पर मालूम हो जाएगा कि नहीं हैं। इस लिये कि सहाबा-ए-किराम या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम पुकारते थे और वहाबी, देवबन्दी शिर्क कहते हैं।

सहाबा-ए-किराम अंगूठा चूम कर आँखों से लगाते थे और वहाबी, देवबन्दी नाजाइज़ व हराम कहते हैं।

लिहाज़ा सूरज की रोशनी से ज़्यादा रोशन और साबित हो गया कि वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरह बद अक़ीदा और गुमराह फ़िर्क़े सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम के तरीक़ा और सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं बल्कि बद मज़हब व गुमराह और कुल्लुहुम फ़िन्नार के मिस्दाक़ जहन्नमी और दोज़ख़ी हैं।

ऐ ईमान वालो ! अब आइये और ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले वहाबी और देवबन्दी, तब्लीग़ी फ़िर्क़े का अक़ीदा और मज़हब व मस्लक जो उनकी किताबों में मौजूद है हवालों के साथ मुलाहज़ा फ़रमाइये और ख़ुद ही फ़ैसला कीजिये।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा अल्लाह तआला के मुतअल्लिक़

ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के शैख़ुल इस्लाम, इमाम व मुजद्दिद इब्ने तैमियह नज्दी का अक़ीदा कि -

اِنَّہٗ بِقَدَرِ الْعَرْشِ لَا اَصْغَرَ وَلَا اَکْبَرَ

तर्जमा : अल्लाह तआला अर्श के बराबर है न छोटा है न बड़ा।

(फ़तावा हदीसिया, स. 100 मतबूआ मिस्र)

(2) ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले वहाबी और देवबन्दी, तब्लीग़ी जमाअत के इमाम व पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा कि ख़ुदाए तआला झूट बोल सकता है। (रिसाला यकरोज़ी, स. 145)

(3) वहाबी, देवबन्दी जमाअत के पीर व मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही का अक़ीदा कि अल्लाह तआला झूट बोल सकता है।

(फ़तावा रशीदिया, स. 113)

(4) मौलवी रशीद अहमद गंगोही से सवाल हुआ कि एक शख़्स कहता है कि ख़ुदाए तआला ने झूट बोला तो ऐसा शख़्स मुसलमान है या काफ़िर ?

जवाब दिया कि उस शख़्स को सख़्त कलमा न कहना चाहिये वह मुसलमान है। (अज़ फ़तवा दस्तख़ती गंगोही बहवाला रद्दे सहाबे साक़िब, स. 286)

अल्लाह तआला के बारे में ईमान वालों का अक़ीदा

मशहूर मुहद्दिस व मुफ़स्सिर इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं कि -

1) झूट बोलना ऐब है और अल्लाह तआला में ऐब होना मुहाल (ना मुमकिन) है (तफ़सीरे कबीर, जि.4, स. 138)

2) इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाया है कि ख़ुदाए तआला की ज़ात पर झूट का गुमान करना भी ईमान से ख़ारिज कर देता है यानी कहने वाला काफ़िर हो जाता है।

(तफ़सीरे कबीर, जि. 5, स. 179)

हज़रात ! अल्लाह तआला की शान व सिफ़त सुब्हान है यानी

अल्लाह तआला की ज़ात पाक है हर कमी और हर ऐब से, और झूट बोलना बहुत बड़ा ऐब व गुनाह है। लिहाज़ा इन्साफ से फैसला कीजिये कि जं. कौम अल्लाह तआला की पाक ज़ात पर झूट का धब्बा लगा रही है उनका अक़ीदा और मज़हब किस क़दर झूटा और ख़राब होगा। अल्लाह तआला रहमान व सुब्हान से हम सुन्नी मुसलमान ऐसे झूटे अकीदा व मज़हब वाले वहाबी, देवबन्दी के शर से आफ़ियत व अमान मांगते हैं।

हज़रात ! अर्श व कुर्सी, ज़मीन व आसमान, जन्नत व दोज़ख, सारा आलम महदूद है यानी उनकी एक हद है। और अल्लाह तआला की ज़ात ला महदूद है। उस ज़ाते पाक की कोई हद नहीं। ला महदूद ज़ात का मकान के हद और दाएरे में समा सकना, ना मुमकिन और मुहाल है। हमारे रब तआला की शान व अज़मत अल्लाहु अकबर यानी अल्लाह तआला सबसे बड़ा है। लिहाज़ा वह शख़्स जो यह अक़ीदा रखे कि अल्लाह तआला अर्श से न छोटा है न बडा, यक़ीनन वह शख़्स काफ़िर है।

(5) ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी और देवबन्दी के वली और शहीद मौलवी इस्माईल दहलवी का अकीदा कि अल्लाह के मक्र से डरना चाहिये।

(तकवियतुल ईमान, स.98)

हज़रात ! कलेजा थामकर फ़ैसला कीजिये कि मक्र का लफ़्ज़ हमारे दर्मियान किसके लिये बोला जाता है और वहाबियों, देवबन्दियों ने मक्र का लफ़्ज़ अल्लाह तआला की पाक ज़ात के लिये लिखा है। अब न पहचानोगे तो कब पहचानोगे कि उन बद अक़ीदों ने अपने मक्र व फ़रेब को छुपाने के लिये अल्लाह तआला को भी मक्र वाला लिख दिया।

ग़ैर मुक़ल्लिद वहाबी का अक़ीदा कि नबी को ख़ुदा का नूर मानना कुफ्र है

हज़रात ! कलेजा थाम लीजिये फिर पढ़िये

(6) अहले हदीस कहलाने वाले मौलवी अहमद दीन का अक़ीदा कि नबी को नूर समझने वाले और यहूदियों में कोई फ़र्क़ नहीं।

(बुरहानुल हक़, स.101)

(7) ग़ैर मुक़ल्लिद, अहले हदीस कहलाने वालों का अक़ीदा कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खुदा का नूर मानना कुफ्र है

(सहीफ़ए अहले हदीस, कराची, स.5, 28 नवम्बर 1954)

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी ख़ुदा का नूर हैं

ऐ ईमान वालो ! मुलाहज़ा फ़रमाईये कि जिनके दिलों में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से बुग़्ज़ व इनाद था उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को नूर मानना तो दूर की बात है, नूर मानने वालों को काफ़िर लिख दिया और जिनका सीना इश्क़ो महब्बत का मदीना है यानी आशिक़े रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो लिखते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम नूर हैं और अपने आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की गुलामी का हक़ अदा करते हुए कुरआने मजीद सुबूत में पैश करते हैं।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को नूर फ़रमाया :

قَدْ جَآءَ كُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ

तर्जमा : तहक़ीक़ आया तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से एक नूर और किताब रोशन (पारा 6, रुकूअ 7)

आला हज़रत लिखते हैं कि उलमा फ़रमाते हैं कि यहाँ नूर से मुराद मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हैं।

(मजमूअए रसाइल, मस्अला नूर और साया, स.62)

तमाम मुहद्देसीन और अइम्मा फ़रमाते हैं कि आयते करीमा में नूर से मुराद हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की ज़ाते गिरामी है। (तफ़्सीर इब्ने जोज़ी, जि.2, स.317)

हज़रात ! हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम को अल्लाह तआला का नूर न मानना कुरआने मजीद का इन्कार है जो कुफ्र है।

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया :

يَا جَابِرُ اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى قَدْ خَلَقَ قَبْلَ الْاَشْيَآءِ نُوْرَ نَبِيِّکَ مِنْ نُوْرِهٖ

ऐ जाबिर ! अल्लाह तआला ने बेशक सबसे पहले तेरे नबी के नूर को अपने नूर से पैदा फ़रमाया।

हवाला मुलाहज़ा फ़रमाईये।

इस हदीस को हज़रत इमाम बुख़ारी रहेमाहुल्लाहुल बारी के दादा उस्ताज़ ने मोसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में अल्लामा क़स्तलानी, मवाहेबुल लदुन्निय्यह शरीफ़, जिल्द 1, स.9 पर अल्लामा हल्बी ने सीरते हल्बियह, जि.1, स.37 पर, अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने फ़तावा हदीसियह, जि.1, स. 51 पर, अल्लामा फ़ासी ने मतालेउल मसर्रात, स.210 पर, अल्लामा ज़ुरक़ानी ने ज़ुर्क़ानी शरीफ़, जि. 1, स.46 पर, अल्लामा यूसुफ़ नब्हानी हुज्जतुल्लाहे अलल आलमीन, स. 28 पर, और अल अनवारुल मोहम्मदियह, स.9 पर लिखा।

(1) हज़रत क़ाज़ी इयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लिखा कि :
जब आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम कलाम फ़रमाते तो दाँतों से नूर छनता नज़र आता।

(शिफ़ा शरीफ़, जि.1, स.55, तिर्मिज़ी शरीफ़, स.302)

(2) और हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकता (शिफ़ा शरीफ़, जि.1, स.51)

(3) और अल्लामा जलालुद्दीन स्यूती रहमतुल्लाहे तआला अलैहि लिखते हैं जब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हँसते, दीवारें रौशन हो जातीं। (ख़साइसे कुबरा, जि.1, स.179)

(4) मश्हूर आशिक़े रसूल इमाम यूसुफ़ नब्हानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहे लिखते हैं कि :

जब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम पैदा हुए, उनके नूर से मशरिक़ से मग़रिब तक मुनव्वर हो गया।

(अनवारे मुहम्मदियह, जि.1, स.240)

(5) मश्हूर मोहद्दिस इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि :

जब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम पैदा हुए

तो तमाम दुनिया नूर से भर गई। (ख़साइसे कुबरा, जि.1, स.118)

(6) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की वालिदा माजिदा हज़रत आमेना तय्यिबा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं :

मैंने उनके सर से एक नूर बलन्द होता देखा कि आसमान तक पहुँचा। (ख़साइसे कुबरा, जि.1, स.122)

(7) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं कपड़ा सीती थी कि सूई गिर पड़ी, तलाश की, न मिली। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम तशरीफ़ लाए, हुज़ूर के चेहरे के नूर की शुआ से सूई ज़ाहिर हो गई। (तारीख़ इब्ने असाकर, ब हवाला ख़साइसे कुबरा, जि.1, स.156)

(8) जलीलुद क़द्र मुहद्दिस इमाम मुहम्मद अल मेहदी अलफ़ासी लिखते हैं कि नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के नूर से अन्धेरा घर रौशन हो जाता। (मतालेउल मसर्रात, स.313)

हज़रात! कुरआन व सुन्नत और अइम्मए किराम व मोहद्देसीने इज़ाम के अक़वाल व बयानात से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित हो गया कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के नूर हैं लिहाज़ा आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को नूर मानना मुसलमान व मोमिन होने की पहचान है और नूर न मानना काफ़िर व मुनाफ़िक़ होने की अलामत हैं।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को इल्मे ग़ैब नहीं है

(9) इमामुल वहाबिया मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम को न कुछ ताक़त है न कुछ इल्मे ग़ैब। उनकी ताक़त का हाल तो यह है कि अपनी जान तक के भी नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं तो दूसरे को क्या नफ़ा पहुँचा सकते।

और उनको इल्मे ग़ैब होता तो पहले हर काम का अन्जाम मालूम कर लेते और अगर भला मालूम होता तो उस काम को कर लेते और अगर बुरा

मालूम होता तो क्यूँ उस बुराई में क़दम रखते। अल ग़रज़ उनको न कुछ ताक़त है और न उनको इल्मे ग़ैब है। (तकवियतुल ईमान, स.58)

(10) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपना हाल कि क़ब्र में और क़ियामत के दिन मेरे साथ अच्छा होगा या नहीं, कुछ मालूम नहीं। (तक़्वीयतुल ईमान, स.41)

(11) वहाबियों, देवबन्दियों के पैशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी का अक़ीदा कि:

रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्लाह का इल्म कम है।

और शैतान व मलकुल मौत का इल्म कुरआन से साबित है और रसूलुल्लाह का इल्म कुरआन से साबित नहीं।

और जो शख़्स रसूलुल्लाह का इल्म साबित करे वह मुशरिक है।

(बराहीने क़ातिआ, स.51, मतबूआ कानपुर)

और मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी इसी किताब में लिखते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम को उर्दू में बात करते ख़्वाब में देखा तो पूछा कि आपको यह कलाम कहाँ से आ गई। आप तो अरबी हैं। फ़रमाया कि जब से उलमाए मदरसा देवबन्द से हमारा मुआमला हुआ हमको यह ज़बान आ गई। (बराहीने क़ातिआ, स.26)

(12) ग़ैर मुक़ल्लिदों, अहले हदीस कहलाने वालों का अक़ीदा कि:

नबी हो या वली या पीर हो या फ़रिश्ता हो किसी के लिये इल्मे ग़ैब साबित मानना शिर्क है। (मौलवी रफ़ीक़ ख़ान पिसरवी, इस्लाहे अक़ाइद, स.153)

(13) जमाअते इस्लामी के बानी और अमीर मौलवी अबुल आला मौदूदी का अक़ीदा कि:

रसूलुल्लाह ''अनपढ़'' जंगली और देहाती थे।

(तफ़्हीमात, जि....., स.249)

(14) ग़ैर मुक़ल्लिदों और अहले हदीस कहलाने वालों के मुहद्दिस मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी का अक़ीदा कि:

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहो तआला

अन्हा का हार गुम गया था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत आयशा के मुताल्लिक़ गुनाह का शक उस वक़्त तक रहा जब तक कि आयते बरात नाज़िल न हुई। (फ़तावा नज़ीरिया, जि.1, स.24)

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी को इल्मे ग़ैब है

हज़रात ! अल्लाह तआला ख़ुद अपने महबूब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब की शान व अज़मत को क़ुरआने मजीद में बयान फ़रमाता है :

عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ

तर्जमा : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं क़रता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा29, रुकूअ 12)

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا هُوَ عَلَی الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ

तर्जमा : और यह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 30, रुकूअ 6))

وَعَلَّمَکَ مَا لَمْ تَکُنْ تَعْلَمُ وَکَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْکَ عَظِیْمًا

तर्जमा : और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 5, रुकूअ 14)

हज़रात ! क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला के इरशादे पाक से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित है कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूलों को इल्मे ग़ैब की नेअमत व दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाया है।

कितने प्यारे अन्दाज़ में अपने महबूबे आज़म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब का इज़्हार फ़रमाता है यानी

(1) मेरा रसूल ग़ैब की बात बताने में बख़ील नहीं।

(2) और ऐ महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम जो तुम नहीं जानते थे मैंने तुमको वह सब सिखा दिया और

अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल है आप पर।

अफ़सोस !

हज़रात ! अल्लाह तआला अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को देता है और वहाबी इन्कार करते हैं।

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा, ग़ैबदाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब के सबूत के लिये अहादीसे करीमा मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं –

سَلُوْنِیْ عَمَّا شِئْتُمْ

तर्जमा : मुझसे जो कुछ पूछना चाहते हो पूछ लो।

सही बुख़ारी शरीफ़, जि.1, स. 19)

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि -

(2) हदीस शरीफ़ : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने एक बार हम में खड़े होकर इब्तिदाए आफ़रीनिश से लेकर जन्नतियों के जन्नत और दोज़ख़ियों के दोज़ख़ में जाने तक का हाल हम से बयान फ़रमा दिया। (सही बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 1083)

(3) हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू ज़ैद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि -

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हम को जो कुछ भी पहले हो चुका और जो कुछ भी आइन्दा होने वाला था तमाम बयान फ़रमा दिया। (सही मुस्लिम शरीफ़, जि.2, स. 290)

(4) हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया - عَلِمْتُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

तर्जमा : जो कुछ आसमान और ज़मीन में है मेरे इल्म में है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 70)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो लिखते हैं कि -

हज़रत इमाम बुखारी ने इस हदीस को सही फ़रमाया।

(इम्बाउल मुस्तफा बिहाले सिर्रे व इख्फा, स. 5)

(5) हदीस शरीफ़ : हज़रत इमाम बुखारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि -

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम सहाबा के साथ गुज़र रहे थे कि दो क़ब्रों के पास खड़े होकर फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है। एक पेशाब के छीटों से नहीं बचता था और दूसरा ग़ीबत करता था। (सही बुखारी शरीफ, स. 35, मिश्कात शरीफ़, स. 42)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब के सुबूत में यह चन्द हदीसें बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात शरीफ़ के हवाले के साथ पेश कर दी गई हैं वर्ना सिहाह सित्ता की किताबों के अलावा मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ़, शिफ़ा शरीफ़, नसीमुर्रियाज़, मदारेजुन्नबुव्वत वग़ैरह यह सब हदीस की किताबें और इनके अलावा मोहद्देसीन व अइम्मा की किताबें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब की शान व अज़मत को ज़ाहिर और साबित करती नज़र आती हैं।

हज़रात ! इल्मे ग़ैब के बारे में तफ़सीली मालूमात के लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की किताब ''ख़ालिसुल एतिक़ाद'' का मुतालआ कीजिये।

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब का इनकार मुनाफ़िक़ों की आदत है।

मुनाफ़िक़ ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम) ग़ैब की बात क्या जानें ?

हदीस शरीफ़ : तफ़सीरे इमाम तबरी में और तफ़सीर दुर्रे मन्सूर में, हज़रत इमाम बुख़ारी और हज़रत इमाम मुस्लिम के उस्ताद हज़रत अबू बक्र बिन अबी शैबह से रिवायत है और दूसरे अइम्मा-ए-किराम व

मुहद्देसीने इज़ाम हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा के ख़ास शागिर्द सय्यदना इमाम मुजाहिद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया अल्लाह तआला के क़ौल - وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ الخ की तफ़सीर में कि मुनाफ़िक़ीन में से एक शख़्स ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम) हम से बयान करते हैं कि फ़लां की ऊंटनी फ़लां फ़लां वादी में है, भला वह ग़ैब की बात क्या जानें। (ख़ालिसुल एतिक़ाद, स. 15)

यानी किसी शख़्स की ऊंटनी गुम हो गई थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने बता दिया कि वह ऊँटनी फ़लां जंगल में है तो एक मुनाफ़िक़ बोला कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम) ग़ैब का इल्म क्या जानें। इसी वजह से अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा उतारी कि उनसे फ़रमा दीजिये कि अल्लाह और उसके रसूल और उसकी आयतों से ठट्ठा करते हो, बहाने न बनाओ, तुम काफ़िर हो गए ईमान के बाद। (ख़ालिसुल एतिक़ाद, स. 15)

हज़रात! अल्लाह तआला ने मुनाफ़िक़ों की पहचान बयान फ़रमा दी कि नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब का इनकार करना सहाबा-ए-किराम के ज़माने में मुनाफ़िक़ों की अलामत थी। सहाबा-ए-किराम अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के लिये इल्मे ग़ैब लाज़मी तौर पर मानते थे और मुनाफ़िक़ इनकार करते थे। इस दौर में भी ईमान वाले अपने रहीम व करीम नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के लिये इल्मे ग़ैब मानते हैं और वहाबी देवबन्दी इल्मे ग़ैब का इनकार करते हैं तो अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में फ़तवा सादिर फ़रमा दिया कि जो शख़्स नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इल्मे ग़ैब का इनकार करे वह शख़्स मोमिन नहीं बल्कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ है।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को कुछ ताक़त नहीं

हज़रात! अहले हदीस कहलाने वाले वहाबी और देवबन्दी, तब्लीग़ी

फ़िर्क़े का अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को न कुछ ताक़त है न कुछ इल्मे ग़ैब। उनकी ताक़त का हाल तो यह है कि अपनी जान तक के भी नफ़ा व नुक़सान के मालिक नहीं तो दूसरे को क्या नफ़ा पहुँचा सकते। (तक़वीयतुल ईमान, स. 58)

ईमान वालो का अक़ीदा कि नबी को हर ताक़त हासिल है

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को तमाम नेअ़मत व दौलत, रहमत व बरकत और हर ख़ैर के ख़ज़ानों की कुंजी का मालिक व मुख़्तार और हर शर व बला के दूर करने की ताक़त व कुव्वत अता फ़रमा कर आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दाफ़ेइल बला और मुश्किल कुशा बनाया है -

मुलाहज़ा हो आयते करीमा अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ

तर्जमा : और अल्लाह का काम नहीं कि उन्हें अज़ाब करे जब तक ऐ महबूब तुम उन में तशरीफ़ फ़रमा हो। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 9, रुक 18)

हज़रात ! गोया अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में साफ़ तौर पर ज़ाहिर फ़रमा दिया और बता दिया कि मेरा रसूल मोमिन तो मोमिन, काफ़िरों के लिये भी दाफ़ेउल बला हैं और काफ़िरों को भी आप की ज़ात से नफ़ा पहुँचता है।

وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

तर्जमा : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 17, रुकू 7)

गोया अल्लाह तआला ने बता दिया कि ऐ सारी दुनिया वालो ! तुम को रहमत व बरकत मेरे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के ज़रीए मिलेगी इस लिये कि हम ने सब के लिये रहमत अपने महबूब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम को बनाया है।

और जिस घर में रहमत होगी वह घर नेअ़मत व दौलत, सुकून व

इत्मीनान का गहवारा होगा। और जिस मकान में रहमत होगी उस मकान से बला व बीमारी, मुसीबत व ज़ेहमत दूर हो जाएगी। तो पता चला कि अल्लाह तआला ने अपने हबीब हम बीमारों के तबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को नफ़ा पहुँचाने वाला और मुश्किलों को दूर करने वाला बनाया है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं -

अपनी बनी हम आप बिगाड़ें, कौन बनाए बनाते यह हैं
राफ़ेअ़ नाफ़ेअ़ शाफ़ेअ़ दाफ़ेअ़, क्या क्या रहमत लाते यह हैं

नमाज़ियों की वजह से अज़ाब दूर हो जाता है

हदीसे कुदसी : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हमारे ग़म ख़्वार नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बे शक अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि में ज़मीन वालों पर अज़ाब नाज़िल करना चाहता हूँ मगर जब मस्जिदों को आबाद करने वाले यानी नमाज़ियों को देखता हूँ और मेरे लिये आपस में महब्बत रखने वालों को और पिछली रात में तोबह व इस्तिग़फ़ार करने वालों को देखता हूँ तो अपना ग़ज़ब (अज़ाब) तमाम दुनिया वालों से उठा लेता हूँ। (बैहक़ी शरीफ़ बहवाला अल अमनो वल उला, स. 21)

नेक मुसलमान की वजह से बला दूर हो जाती है

(2) हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया बे शक अल्लाह तआला नेक मुसलमान की वजह से उस के पड़ोस में सो घर वालों से बला दूर फ़रमा देता है।

(तबरानी शरीफ़ बहवाला अल अमनो वलउला, स. 21)

(3) हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि शाहे तैबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम के ज़माने में दो भाई थे एक कसब करते रोज़ी कमाते और दूसरे भाई हुज़ूर दाफ़ेइलबला क़ासिमे नेअ़मत व दौलत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर रहते तो कमाने वाले भाई ने उस दूसरे भाई की शिकायत की जो खिदमत में लगे रहते थे तो आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने शिकायत करने वाले से फ़रमाया कि तुझे भी उस की खिदमत की बरकत से रोज़ी मिलेगी। मिलखसन। (तिर्मिज़ी शरीफ़, हाकिम बहवाला अल अमनो वल उला, स. 22)

हज़रात ! अल्लाह तआला की किताब कुरआने मजीद और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अक़वाल और सहाबा-ए-किराम के बयानात और अइम्मा व मुहद्देसीन की रिवायात से साफ़ साफ़ ज़ाहिर और साबित हो गया कि -

जब नमाज़ियों और नेकों की बरकत से नफ़ा पहुँचता है और बला व मुसीबत दूर होती है तो महबूबे ख़ुदा तमाम नबियों व रसूलों और नेकों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के जूदो नवाल, करम व बख़्शिश और अता व सखावत, नफ़ा पहुँचाने की कुव्वत और बला व मुसीबत को दूर करने की ताक़त का आलम क्या होगा।

मोमिन व मुसलमान को यह चन्द अहादीस काफ़ी व शाफ़ी हैं मगर मुनाफ़िक़, बद अक़ीदा पर पूरे कुरआन का कुछ असर नहीं।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मर्दे नादां पर कलामे नर्मो नाज़ुक बे असर

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी और उम्मत सब बराबर हैं

हज़रात ! मोमिन तड़प उठेगा मगर मुनाफ़िक़ पर कुछ असर न होगा, मुलाहज़ा हो।

अहले [illegible]ीस कहलाने वाले वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी जमाअत के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं -

(1) सब इन्सान (नबी हों या उम्मती) आपस में भाई हैं, जो बड़ा हो

वह बड़ा भाई। औलिया व अम्बिया, इमाम ज़ादा, पीर व शहीद सब इन्सान ही हैं और आजिज़ (मजबूर) बन्दे हैं और हमारे भाई हैं और उनकी ताज़ीम इन्सानों की तरह करनी चाहिये (तक़वियतुल ईमान, स. 131)

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को न किसी को कुछ देने की ताक़त है, न किसी से कुछ लेने की ताक़त है। इस वजह से सब बन्दे चाहे नबी हों या छोटे बन्दे आम मख़लूक़ सब बराबर हैं, आजिज़ और मजबूर हैं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 59)

(3) हर मख़लूक़ बड़ा हो या छोटा, अम्बिया, औलिया वह (सब) अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील हैं।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 41)

(4) अम्बिया और औलिया, अल्लाह के रूबरू एक ज़र्रा-ए-नाचीज़ से भी कम तर हैं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 119)

(5) नबी की तारीफ़ एक (आम) आदमी की तरह बल्कि उस से भी कम करो। (तक़वीयतुल ईमान, स. 136)

(6) नबी को एक च्यूंटी का भी सरदार न जानिये।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 136)

(7) मख़लूक़ होने में औलिया व अम्बिया में और जिन व शैतान में और भूत व परी में कुछ फ़र्क़ नहीं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 30)

(8) दुनिया के सारे काम अल्लाह ही के चाहने से होता है रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता। (तक़वीयतुल ईमान, स. 126)

(9) नबी ऐसे हैं जैसे गाँव का चौधरी। (तक़वीयतुल ईमान, स. 64)

बानी दारुल उलूम देवबन्द मौलवी क़ासिम नानोतवी का अक़ीदा

(10) उम्मती अमल में नबी के बराबर हो सकता है, बल्कि नबी से बढ़ सकता है। (तहज़ीरुन्नास, स. 5)

ईमान वालों का अक़ीदा कि हमारे नबी जुमला अम्बिया व रसूल से अफ़ज़ल हैं

हज़रात! अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को किस क़दर शरफ़ो

बुजुर्गी से सरफ़राज़ फ़रमाया है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) आयते करीमा : अल्लाह तआला फ़रमाता है -

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

तर्जमा : मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में किसी के बाप नहीं हाँ अल्लाह के रसूल हैं और सब नबियों में पिछले। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 22, रुकूअ 2)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने कितने वाज़ेह अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाया कि हमारे प्यारे रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को बाप की हैसियत से दर्जा व मुक़ाम मत देना बल्कि मेरे महबूब रसूल हैं और आख़री नबी हैं।

यानी अल्लाह तआला की मशियत यह है कि मेरे हबीब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बड़ा भाई, छोटा भाई या एक आदमी का दर्जा तो क्या बाप के दर्जा की हैसियत से भी न देखना बल्कि मेरा महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के रसूल और आख़री नबी हैं।

हज़रात ! अल्लाह तआला ख़ालिक़ व मालिक है मगर अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को रसूल और ख़ातेमुल अम्बिया फ़रमा रहा है।

मगर अफ़सोस कि वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी लोग ज़र्रा-ए-नाचीज़ से भी कम तर और चमार से ज़्यादा ज़लील कह रहे हैं। मआज़ल्लाहे तआला

हज़रात ! इन्साफ़ की आँख से देखिये और फ़ैसला कीजिये कि ऐसा गन्दा अक़ीदा रखने वाले मोमिन व मुसलमान हो सकते हैं ? हर गिज़ नहीं।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को जुमला अम्बिया और रुसुल से अफ़ज़ल व आला बनाया है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है।

(2) आयते करीमा :

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ مِنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ

तर्जमा : यह रसूल हैं हमने उन में एक को दूसरे पर अफ़ज़ल किया। उन में किसी से अल्लाह ने कलाम फ़रमाया और कोई वह है जिसे सब पर दर्जों बलन्द किया। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 3, रुकूअ 1)

हज़रात ! अल्लाह तआला अलीम व ख़बीर है।

वह जानता था कि कुछ लोग कलमा व नमाज़ पढ़ने वाले और रोज़ा व दाढ़ी रखने वाले मेरे हबीब ख़ातिमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को आम मख़लूक़ ही नहीं बल्कि ज़र्रा-ए-नाचीज़ से भी कम तर और चमार से ज़्यादा ज़लील कहेंगे और अपनी किताबों में लिखेंगे और मोमिनों, मुसलमानों के सामने मेरा नाम लेंगे और कहेंगे और लिखेंगे कि हम ने ऐसा जो कहा है या लिखा है अल्लाह की मख़लूक़ होने के ऐतिबार से कहा है कि सब अल्लाह ही की मख़लूक़ हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में कलमा व नमाज़ पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ों और रोज़ा व दाढ़ी रखने वाले बे ईमानों को गोया जवाब दिया है कि एक रसूल, दूसरे रसूल के बराबर नहीं है आम मख़लूक़ और आम आदमी तो कुजा ? बल्कि बाज़ रसूल बाज़ से अफ़ज़ल व आला हैं और सारे अम्बिया और तमाम रसूलों से अफ़ज़ल व आला महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हैं।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं -

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी
सब से आला व औला हमारा नबी
सब से बाला व वाला हमारा नबी

(हदाइक़े बख़्शिश)

नेअ़मत व दौलत का देने वाला हमारा नबी

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहो

तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को दोनों जहान की नेअमत व दौलत देने की ताक़त अता फ़रमाई है -

मुलाहज़ा फ़रमाइये -

(3) आयते करीमा : अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَمَآ اٰتٰكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا

तर्जमा : और जो कुछ तुम्हें रसूल अता फ़रमाएं वह लो और जिससे मना फ़रमाएं बाज़ रहो। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 28, रूकू 4)

कुरआन में है कि अल्लाह व रसूल ने उनको दिया

(4) आयते करीमा : अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗ

तर्जमा : और क्या अच्छा होता अगर वह उस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया और कहते हमें अल्लाह काफ़ी है अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और अल्लाह का रसूल।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 10, रुकू 13)

हज़रात ! इन आयात से अल्लाह तआला के फ़रमान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को देने की ताक़त व कुव्वत अता फ़रमाई है इसी लिये तो रब तआला फ़रमाता है कि मेरा रसूल जो तुम्हें दे वह ले लो।

और आयते मुबारका से यह भी पता चला कि अल्लाह तआला देता है और अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से उसके रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम भी देते हैं इसी लिये तो अल्लाह तआला फ़रमाता है - مَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ

तर्जमा : जो अल्लाह और उसके रसूल ने उनको दिया।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 10, रुकूअ 13)

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा जो तक़वीयतुल ईमान सफ़ा 59 पर लिखा हुआ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को न किसी को कुछ देने की ताक़त है न किसी से कुछ लेने की ताक़त है।

हज़रात ! ईमान के साथ फ़ैसला कीजिये कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मेरा रसूल जो अता फ़रमाए वह ले लो।

और दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया।

तो मालूम हुआ कि कुरआने करीम का दिया हुआ सचा अक़ीदा यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम देते हैं, अता फ़रमाते हैं और वहाबी देवबन्दी का झूटा अक़ीदा कि रसूलुल्लाह को देने की ताक़त नहीं है। यह खुला हुआ कुरआन का इनकार है जो यक़ीनन कुफ़्र व इलहाद है।

हज़रात ! वहाबी देवबन्दी का अक़ीदा है कि अगर कोई शख़्स यह कहे कि अल्लाह व रसूल ने दिया तो ऐसा शख़्स मुशरिक हो जाता है जब कि आयते करीमा में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है -

مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ

तर्जमा : जो अल्लाह व रसूल ने उनको दिया।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 10, रुकू 13)

ऐ ईमान वालो ! ख़ुद अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के नाम को अपने नाम के साथ रखा जो आयत से साफ़ ज़ाहिर और साबित है तो अगर कोई मोमिन यह कहे कि अल्लाह व रसूल ने दिया तो यह सचा अक़ीदा कुरआनी है और अल्लाह तआला का अता किया हुआ है और वहाबी, देवबन्दी कुरआने करीम के मुनकिर ठहरे और काफ़िर व मुरतद हुए।

हदीसे बुख़ारी कि नबी बांटते हैं

हज़रात ! हम अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा और ईमान है कि अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से हमारे नबी देते हैं और मांगने वाले का सवाल पूरा फ़रमाते हैं।

मुलाहज़ा फ़रमाइये -

(1) हदीस शरीफ़ : इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि ने लिखा है कि हमारे हुज़ूर क़ासिमे नेअ़मत व दौलत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया -

اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰهُ يُعْطِىْ

तर्जमा : अल्लाह तआला देने वाला और मैं बांटने वाला हूँ।

(सहीह बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 16)

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी के चाहने से कुछ नहीं होता

हज़रात ! वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा तक़वीयतुल ईमान स. 126 पर लिखा है कि रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता।

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी के चाहने से क़िब्ला बदल दिया गया

और सहाबा-ए-किराम से लेकर आज तक तमाम मोमिनों, मुसलमानों का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला की मर्ज़ी से ही हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम चाहते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के चाहने से अल्लाह तआला उसको पूरा फ़रमा देता है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(1) आयते करीमा : अल्लाह तआला फ़रमाता है।

فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا

तर्जमा : तो ज़रूर हम तुम्हें फैर देंगे उस किब्ले की तरफ़ जिस में तुम्हारी ख़ुशी है। (कन्ज़ुल ईमान, पारा, 2 रुकू 1)

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने चाहा कि बैतुल मुक़द्दस की बजाए ख़ाना-ए-कअ़बा मेरा क़िब्ला हो जाए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ महबूब ! सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम जिस को आप चाहते हैं अपना मुंह उसी की जानिब कर लीजिये मैंने आप की चाहत के मुताबिक़ उसी को क़िब्ला बना दिया।

हज़रात ! अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के चाहने ही से बैतुल मुक़द्दस की बजाए ख़ाना-ए-कअ़बा को क़िब्ला बना दिया।

आयते करीमा से, अल्लाह तआला के फ़रमान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि अल्लाह तआला की चाहत व ख़ुश्नोदी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की चाहत व ख़ुश्नोदी में है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चाहने से सब कुछ होता है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं।

ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद

(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ से काम लीजिये और फ़ैसला कीजिये कि -

वहाबियों, देवबन्दियों ने किस क़द्र अल्लाह तआला के हबीब हम बीमारों के तबीब मुश्फ़िक़ व मेहरबान नबी और क़ासिमे नेअ़मत व दौलत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शाने अक़्दस में खुलकर बे अदबी और गुस्ताख़ी की है। इस तरह गुस्ताख़ी व बे अदबी तो इब्लीस शैतान मलऊन ने भी सोचा तक न होगा जो यह मुनाफ़िक़ कलमा व नमाज़ व तस्बीह व दाढ़ी की आड़ में कर रहे हैं और अपनी किताबों में लिख कर छाप रहे हैं, उन्हीं गुस्ताख़ियों और बे अदबियों कि वजह से वहाबी, देवबन्दी काफ़िर व मुर्तद हैं।

लिहाज़ा हर हाल में इन से दूर रहना और उन को अपने से दूर रखना फ़र्ज़ है। यह मर जाएं तो उन की नमाज़े जनाज़ा में शरीक होना, उन के पीछे नमाज़ पढ़ना, उन के यहाँ शादी ब्याह करना और उन के साथ खाना पीना और उठना, बैठना सख़्त मना, सख़्त मना, सख़्त मना और हराम है और इन उमूर को जाइज़ समझ कर किया तो कुफ़्र है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो

तआला अन्हो फ़रमाते हैं।

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि मजलिसे मीलाद शरीफ़ हर हाल में हराम है

ऐ ईमान वालो ! बहुत ही ग़ौर व फ़िक्र के साथ कलेजा थाम कर सुनिये ! और अपने ईमान व इस्लाम की फ़िक्र करिये और वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी किस क़द्र बे अदब और गुस्ताख़ हैं मुलाहज़ा कीजिये।

वहाबियों, देवबन्दियों और तब्लीग़ियों के पीर व मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि -

(1) मजलिस मीलाद शरीफ़ हर हाल में नाजाइज़ व हराम है।

(फ़तावा रशीदिया, जि.2, स.83)

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि मीलाद कन्हैया के जनम की तरह है

मशहूर देवबन्दी मौलवी ख़लील अहमद अम्बैठवी लिखते हैं कि-

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की मीलाद (कृष्ण) कन्हैया के जन्म की तरह है।

(बराहीने क़ातिआ, स. 148 मतबूआ देवबन्दी)

अहले हदीस कहलाने वालों के मुहद्दिस मियां नज़ीर हुसैन देहलवी के शागिर्द मौलवी अबू यहया मुहम्मद शाहजहाँ पूरी लिखते हैं कि -

(3) मजलिसे मीलाद शरीफ़, क्याम वग़ैरह बिदअत व शिर्क है।

(अल इरशाद इला सबीलिर्रिशाद, स. 48)

अहले हदीस कहलाने वालों के हाफ़िज़ मुहम्मद जूना गढ़ी लिखते हैं कि -

(4) मीलादे मुहम्मदी के वाक़िआत जो बयान किये जाते हैं सरासर झूटे हैं और किसी दज्जाल के गढ़े हुए हैं।

(अख़बारे मुहम्मदी देहली, स. 3, 15 जनवरी सन् 1940)

अहले हदीस कहलाने वालों का अक़ीदा है कि -

(5) 12 रबीउल अव्वल के दिन दुकानें बन्द रखना और मजलिसे मौलूद करना गुनाह है। (अहले हदीस अमृतसर, स. 6, 20 मई सन् 1938)

ग़ैर मुक़ल्लिदों अहले हदीस कहलाने वालों के मुफ़्ती मौलवी अब्दुस्सत्तार दहलवी ने फ़तवा दिया है कि -

(6) जिस मस्जिद में महफ़िले मीलाद व क़याम वग़ैरह हों तो ऐसी मस्जिद में नमाज़ न पढ़ना वाजिब है। (फ़तावा सत्तारिया, जि. 1 स. 57)

हज़रात ! वहाबियों के पीर मौलवी रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा आप हज़रात ने पढ़ लिया है कि महबूबे ख़ुदा हमारे मुशिफ़क़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की मीलाद शरीफ़ हर हाल में नाजाइज़ व हराम है मगर यही वहाबियों के पीर रशीद अहमद गंगोही का फ़तवा है कि बच्चों का जन्म दिन, साल गिरह मनाना जाइज़ व दुरुस्त है मुलाहज़ा कीजिये।

(7) बच्चों की सालगिरह मनाना और उसकी ख़ुशी में खाना खिलाना जाइज़ व दुरुस्त है। (फ़तावा रशीदिया, जि.1, स. 74)

हज़रात ! वहाबियों देवबन्दियों के ईमान के साथ साथ अक़्ल भी बरबाद हो चुकी है कि बच्चों का जन्म दिन मनाना तो जाइज़ और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की पैदाइश व मीलाद मनाना नाजाइज़ व हराम।

ख़ुदा जब दीन लेता है तो अक़्लें छीन लेता है

अहले हदीस कहलाने वालों के शैख़ुल कुल मियाँ नज़ीर हुसैन दहलवी लिखते हैं कि -

''ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' का वज़ीफ़ा जाइज़ नहीं। (फ़तावा नज़ीरिया, जि. 1, स. 449, मतबूआ देहली)

जिस मुसलमां के घर ईदे मीलाद हो
उस मुसलमां की क़िस्मत पे लाखों सलाम

ईमान वालों का अक़ीदा कि ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कारे ख़ैर और महबूब अमल है

ऐ ईमान वालो ! मुनाफ़िक़ों, गुस्ताख़ों ने मीलादे पाक के बारे में इस

क़द्र दरीदा दहनी और बे अदबी का मुज़ाहरा किया है कि इस क़द्र बे बाक और निडर तो यहूदो नसारा और मुश्रेकीन भी नहीं हैं। लिहाज़ा इन बे अदबों को पहचानिये और इन से दूर रहिये और अपने ईमान की हिफ़ाज़त कीजिये और यक़ीन रखिये कि हमारे प्यारे आक़ा मुश्फ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की मीलाद शरीफ़ का ज़िक्र करना नाजाइज़ व हराम नहीं बल्कि कुरआन व सुन्नत और सहाबा-ए-किराम व बुज़ुर्गाने दीन के अक़वाल व अहवाल से ज़ाहिर और साबित है कि ज़िक्रे मीलादे पाक कारे ख़ैर और मुबारक व महबूब अमल है।

हज़रात ! सबसे पहले ख़ुद अल्लाह तआला ने महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की तशरीफ़ आवरी का तज़्किरा, पैदाइश का ज़िक्र और मीलाद शरीफ़ का बयान अम्बियाए किराम रसूलाने इज़ाम की रूहों के इज्तिमाअ में फ़रमाया, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

ज़िक्रे मीलाद शरीफ़ कुरआन से साबित है

आयते करीमा : अल्लाह तआला फ़रमाता है –

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ الخ

तर्जमा : जब अल्लाह तआला ने सब नबियों से अहद लिया (हमारे हुज़ूर की तशरीफ़ आवरी के बारे में) (कन्ज़ुल ईमान, पारा 3, रुकू 17)

हज़रात : इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की मीलाद का तज़्किरा फ़रमाया इसी तरह –

لَقَدْ جَآءَ كُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

तर्जमा : बे शक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है, तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 11, रुकू 5)

और قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ

तर्जमा : बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रोशन किताब। (कन्जुल ईमान, पारा 6, रुकू 7)

और لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ

तर्जमा : बेशक अल्लाह का बड़ा एहसान हुआ मुसलमानों पर कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा। (कन्जुल ईमान, पारा 4, रुकू 8)

और وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

तर्जमा : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहां के लिये।

(कन्जुल ईमान, पारा 17, रुकू 7)

रसूलुल्लाह ने ख़ुद अपना मीलाद बयान फ़रमाया

इन आयाते तय्यिबात में अल्लाह तआला ने ज़िक्रे महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम फ़रमा कर आपके औसाफ़े जमीला का ज़िक्र फ़रमाया और ख़ुद हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने अपना ज़िक्रे मीलाद बयान फ़रमाया है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : यानी मैं उस वक़्त नबी था जब आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी और ख़मीर में थे और मैं तुम्हें अपनी इब्तिदा की ख़बर देता हूँ, मैं दुआए इब्राहीम का नतीजा हूँ और मैं बशारते ईसा हूँ और मैं अपनी वालिदा का ख़्वाब हूँ जो मेरी वालिदा ने मेरी विलादत के वक़्त देखा था। वालिदा माजिदा से मेरी विलादत के वक़्त ऐसा नूर ज़ाहिर हुआ था जिस की रोशनी से मुल्के शाम के महल्लात रोशन हो गए थे। (मिश्कात शरीफ़, स. 505)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने अपनी मीलाद का ज़िक्र फ़रमाया और इसी हदीस शरीफ़ में सरकार सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने अपनी विलादत के वक़्त रूनुमा होने वाले वाक़िआत और ज़ाहिर होने वाले नूर का तज़्किरा भी फ़रमा दिया तो साफ़

तौर पर पता चला कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ को कन्हैया के जन्म की तरह कहने वाला काफ़िर व मुर्तद है और मीलाद शरीफ़ के नूरानी वाक़िआत को झूटा साबित करना और दज्जाल का गढ़ा हुआ कहना अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को झूटा और दज्जाल कहना हुआ और इस तरह की बात बद बख़्त मुनाफ़िक़ और मुर्तद जहन्नमी ही कह सकता है।

हज़रात ! इमाम नव्वी के उस्ताद इमाम अबू शामह, मशहूर मुहद्दिस इमाम सखावी ने मीलाद शरीफ़ के बे शुमार बरकात बयान किये और अल्लामा जोज़ी का क़ौल मनक़ूल है कि महफ़िले मीलाद की ख़ुसूसी बरकतों में से यह है कि जो इस को मुनअक़िद करता है, इसकी बरकतों से सारा साल अल्लाह के हिफ़्ज़ो अमान में रहता है और अपने मक़सद व मतलूब में जल्दी हुसूल के लिये यह एक बशारत है।

(ज़ियाउन्नबी, जि. 2, स. 48)

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि नबी को सिफ़ारिशी और वकील जानने वाला मुशरिक है

ऐ ईमान वालो ! ठन्डे दिल से सोचो और बद अक़ीदों से हर हाल में परहेज़ को लाज़िम कर लो, मुलाहज़ा हो -

अहले हदीस कहलाने वालों के इमाम और वहाबी देवबन्दी, तब्लीग़ी जमाअत के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं -

(1) अल्लाह की बारगाह में नबी को सिफ़ारशी और वकील जानने वाला मुशरिक है। (तक़वीयतुल ईमान, स. 64)

(2) नबी ख़ुद अपना बचाव नहीं जानते तो दूसरे को क्या बचाऐंगे।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 64)

(3) किसी मुश्किल में नबी या वली को पुकारने वाला मुश्रिक हो जाता है। (तक़वीयतुल ईमान, स. 76)

(4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी बेटी फ़ातिमा को क़ियामत के दिन नहीं बचा सकते। (तक़वीयतुल ईमान, स. 79)

(5) जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। (तक़्वीयतुल ईमान, स. 89)

(6) मौलवी इस्माईल ग़ज़नवी लिखते हैं कि जो शख़्स या रसूलल्लाह या, या अब्दुल क़ादिर जीलानी पुकारे वह मुश्रिक है, वह शख़्स शिर्के अकबर का मुरतकिब है अगरचेह उसका अक़ीदा यही हो कि फ़ाइले हक़ीक़ी फ़क़त रब्बुल इज़्ज़त है। ऐसे लोगों का ख़ून बहाना जाइज़ है और उनके माल को लूट लेना मुबाह है। (तोहफ़ए वहाबिया, स. 59)

वहाबी, देवबन्दी और तब्लीग़ी जमाअत के बड़े मौलवी, मौलवी अशरफ़ अली थानवी लिखते हैं किसी के सामने झुकना, सेहरा बाँधना, अली बख़्श, हुसैन बख़्श, अब्दुन्नबी वग़ैरह नाम रखना कुफ़्र व शिर्क है।

(बहिश्ती ज़ेवर हिस्सा अव्वल, स. 45)

यह कहना कि ख़ुदा व रसूल चाहे तो फ़लां काम हो जाएगा। कुफ़्र व शिर्क है। (बहिश्ती ज़ेवर हिस्सा अव्वल, स. 45)

मौलवी अशरफ़ अली थानवी के बड़े पेशवा देवबन्दी जमाअत के पीर व मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही का ख़ानदानी शजरह किताब तज़किरतुर्रशीद स. 13 पर इस तरह लिखा है –

पिदरी नसब नामा : रशीद अहमद बिन हिदायत अहमद बिन पीर बख़्श बिन गुलाम हसन बिन गुलाम अली।

मादरी नसब नामा : रशीद अहमद बिन करीमुन्निसा बिन्त फ़रीद बख़्श बिन गुलाम क़ादिर बिन मुहम्मद सालेह बिन गुलाम मुहम्मद।

हज़रात ! ग़ौर कीजिये कि रशीद अहमद गंगोही के दादा का नाम पीर बख़्श और नाना का नाम फ़रीद बख़्श है इसी तरह वहाबी, देवबन्दी के पीर व मुर्शिद रशीद अहमद गंगोही के आबा व अज्दाद में कितने ऐसे हैं जो मौलवी अशरफ़ अली थानवी के फ़तवे के मुताबिक़ काफ़िर व मुश्रिक हुए।

वहाबी मज़हब के बानी मुहम्मद बिन अब्दुल वहहाब नज्दी का अक़ीदा

(1) नबिये अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तवस्सुल करने वाला काफ़िर हो जाता है। (अद्दरुस्सुन्निया, स. 39)

वहाबी नज्दियों का अक़ीदा है कि या रसूलल्लाह कहने वाला काफ़िर है

वहाबी और नज्दियों की मुस्तनद किताब तोहफ़ा-ए-वहाबिया में लिखा है कि -

(2) या रसूलल्लाह कहने वाला काफ़िर है (तोहफ़ा-ए-वहाबिया, स. 68)

अहले हदीस कहलाने वालों के इमाम इब्ने तैमिया लिखते हैं कि -

(3) फ़ौत शुदह अम्बिया व औलिया को पुकारना और उनसे दुआ व शफ़ाअत की इल्तिजा करना शिर्क है। (किताबुल वसीला, स. 63)

अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के पेशवा मौलवी अब्दुस्सत्तार दहलवी लिखते हैं कि -

(4) या रसूलल्लाह का नारा लगाना शिर्क और हराम है।

(सहीफ़ा-ए-अहले हदीस कराची, स. 23, 15 मुहर्रम सन् 1374 हि.)

(5) या अल्लाह के साथ या मुहम्मद कहना शिर्क है।

(सहीफ़ा-ए-अहले हदीस कराची स. 23, 15 मुहर्रम सन् 1374 हि.)

अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के मुहद्दिस अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं कि -

.(6) अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या हबीबल्लाह

पढ़ना हर हाल में बुरा है। (रिसाला सिमाअ़ मौता, स. 15)

वहाबियों देवबन्दियों के मशहूर मौलवा हुसैन अहमद मदनी टान्डवी लिखते हैं कि -

(7) हमारे हाथ की लाठी सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा नफ़ा देने वाली है, हम इस (लाठी) से कुत्ते को दफ़ा कर सकते हैं। (अश्शहाबुस्साक़िब, स. 47)

देवबन्दी मौलवी हुसैन अली लिखते हैं कि -

(8) मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप मुझे पुल सिरात पर ले गए और मैंने देखा कि आप पुल सिरात से गिर रहे हैं तो मैंने आपको गिरने से बचा लिया। (मुबश्शिराते..........)

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी सिफ़ारशी और वकील हैं

(1) हदीस शरीफ़ : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम फ़रमाते हैं कि –

यानी जब अल्लाह तआला ने अर्श बनाया तो उस पर नूर के क़लम से जिसका तूल मशरिक़ से मग़रिब तक था, लिखा –

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ بِهٖ اٰخُذُ وَاُعْطِیْ اِلٰی اٰخِرِ الْحَدِیْثِ

तर्जमा : अल्लाह तआला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं, इन्हीं के वास्ते से लूंगा और उन्हीं के वास्ते से दूंगा (अल अमनो वल उला, स. 33)

हमारे नबी की शफ़ाअत से गुनाहगार जहन्नम से निकाल लिये जाऐंगे

(2) हज़रत उबादह बिन सामित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम फ़रमाते हैं कि –

हदीस शरीफ़ : यानी बेशक मैं ब रोज़े क़ियामत तमाम जहान वालों का सरदार हूँ और मेरे हाथ में लिवाउल हम्द होगा, कोई शख़्स ऐसा न होगा जो मेरे झन्डे के नीचे न होगा, मैं चलूँगा और लोग मेरे साथ होंगे यहाँ तक कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच कर दरवाज़ा खुलवाउँगा। सवाल होगा कौन हैं ? मैं फ़रमाउंगा मुहम्मद (सल्लल्लहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम) कहा जाएगा मरहबा मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को। फिर जब मैं अपने रब तआला को देखूँगा तो उसकी बारगाह में सज्दा करूँगा, हुक्म होगा –

اِرْفَعْ رَاسَکَ وَقُلْ تُطَاعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ

ऐ महबूब ! (सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम) कहो तुम्हारी मानी जाएगी और शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत कुबूल होगी। पस जो लोग जहन्नम में जा चुके थे वह अल्लाह की रहमत और मेरे

शफ़ाअत से दोज़ख़ से निकाल दिये जाएंगे।

(अल अमनो वल उला, स. 87, बहवाला मुस्तदरिक लिल हाकिम)

हज़रात ! वहाबियों पर ख़ुदा की लअ़नत है जिनका अक़ीदा है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को पुलसिरात पर गिरने से बचा लिया। मआज़ल्लाह सद बार मआज़ल्लाह।

हज़रात ! इन दोनों हदीसों से ज़ाहिर और साबित हुआ कि ख़ुद अल्लाह तआला अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के वसीले से अता फ़रमाता है और अल्लाह तआला की अता से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम जहन्नम से बचाते हैं और जन्नत अता फ़रमाते हैं तो साबित हुआ कि जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम अपनी उम्मत को अज़ाब से बचाऐंगे वह आक़ा क्या अपनी बेटी फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा को न बचाऐंगे । उनके लिये तो आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी बेटी फ़ातिमा जन्नती औरतों की सरदार हैं।

हमारे नबी जन्नत बांटते हैं

(3) हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने हज़रत रबीआ बिन कअ़ब अस्लमी से इरशाद फ़रमाया :

ऐ रबीआ ! मुझ से जो मांगना हो मांग लो हज़रत रबीआ अर्ज़ करते हैं

اَسْئَلُکَ مُرَافَقَتَکَ فِی الْجَنَّۃِ

तर्जमा : मैं जन्नत में आप का साथ मांगता हूँ।

(सही मुस्लिम शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, इब्ने माजा शरीफ़, मुअज़म कबीर तबरानी, अल अमनो वल उला, स. 110)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ख़ुद फ़रमाते हैं कि मुझ से मांगो ! और सहाबी हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहो अन्हो ने मालिके जन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से जन्नत भी मांग ली

और जन्नत में सरकार सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम की रिफ़ाक़त तलब की और दोनों ने अमर्ते उन को हासिल भी हो गई।

तो मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से मांगना शिर्क व बिदअत नहीं बल्कि सहाबी की सुन्नत है जो हदीस से साबित है।

या रसूलल्लाह कहना कुफ्र नहीं है बल्कि सहाबा की सुन्नत है

(4) हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही द सल्लम ने एक नाबीना को दुआ तअ़लीम फ़रमाई।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَتَوَجَّہُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَۃِ یَامُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّہُ
بِکَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ لِیُقْضٰی لِیْ فَشَفِّعْہُ فِیَّ

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से मांगता हूँ और तेरी तरफ़ तवज्ञोह करता हूँ तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के वसीले से जो रहमत वाले नबी हैं। या रसूलल्लाह मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब की तरफ़ अपनी इस हाजत में तवज्ञोह करता हूँ ताकि मेरी हाजत पूरी हो। ऐ अल्लाह उन्हें मेरा शफ़ीअ़ कर, उन की शफ़ाअत मेरे लिये कुबूल फ़रमा। (नसाई, तिर्मिज़ी, इब्ने खुज़ैमा, तबरानी, हाकिम, बैहक़ी, अल अमनो वल उला, स. 113)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि सहाबा-ए-किराम हुज़ूर के वसीले से दुआ करते थे और या मुहम्मद, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम पुकारना शिर्क व बिदअत नहीं बल्कि सहाबा की सुन्नत है।

बादे विसाल भी सहाबा या रसूलल्लाह कहते थे

(5) हदीस शरीफ़ : यानी सहाबा-ए-किराम जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होते तो अस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह कहते।

(मोसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, जि. 3, स. 576)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद भी सलाम करना और या रसूलल्लाह कहना सहाबा-ए-किराम की सुन्नत है।

शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी रहमतुल्लाहे तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि -

मुसीबतों में या अली, या अली, या अली पुकारोगे तो उन्हें अपना मददगार पाओगे। (अल अमनो वल उला, स. 13)

हज़रात ! गैर मुकल्लिद, वहाबी, देवबन्दी यह सब के सब हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे दहलवी को अपना बुज़ुर्ग मानते हैं तो उनसे कहा जाए कि शाह साहब ने या अली, या अली, या अली पुकारने की तालीम दी है तो उन पर कुफ़्र व शिर्क का हुक्म लगाएं।

अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह कहना हदीस से साबित है

हज़रात ! अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या हबीबल्लाह
पढ़ना हदीस शरीफ़ से साबित है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा क़ाज़ी इयाज़ रहमतुल्लाहे तआला अलैहि हदीस नक़्ल फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रावी हैं वह फ़रमाते हैं कि मुझे वह पत्थर अभी तक याद है जिनके पास से मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ गुज़ारा करता था और पत्थर बलन्द आवाज़ से कहते थे -

अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या हबीबल्लाह
(शिफ़ा शरीफ़)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि

अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या हबीबल्लाह

पढ़ना बुरा अमल नहीं है अगर बुरा अमल होता तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो न पढ़ते और न रिवायत फ़रमाते और मुहद्देसीने किराम हदीस की किताबों में लिखते भी नहीं।

तो मालूम हुआ कि वहाबी, देवबन्दी का मज़हब ही बुरा है और -

अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह
अस्सलातो वस्सलामो अलैका या नबिय्यल्लाह

पढ़ना हर हाल में अच्छा अमल और सहाबा की सुन्नत है।

हज़रात ! हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कुतुबुल अक़ताब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शाने ग़ौसियत को यूँ बयान की है -

या ग़ौसे मुअज़्ज़म नूरे हुदा, मुख़्तारे नबी, मुख़्तारे ख़ुदा

(अहले सुन्नत की आवाज़ ,सन् 2008, स. 295)

तो मालूम हुआ कि या ग़ौस कहना हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की सुन्नत है।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि रसूलुल्लाह मर कर मिट्टी में मिल गए

अहले हदीस कहलाने वालों के इमाम और वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी इस्माईल दहलवी लिखते हैं कि -

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मर कर मिट्टी में मिल गए। (तक़वीयतुल ईमान, स. 133)

(2) नबी मर गया वह भी कभी ज़िन्दा था और ब शरीयत की क़ैद में गिरफ़्तार। (तक़वीयतुल ईमान, स. 132)

अहले हदीस कहलाने वालों के पेशवा मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी लिखते हैं कि -

(3) हमारा अक़ीदा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरे इन्सानों की तरह वफ़ात पा गए।

(अख़बार अहले हदीस अमृतसर, 25 अप्रैल 1941)

वहाबी, देवबन्दी मौलवी हुसैन अहमद मदनी टांडवी लिखते हैं कि -

(4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वफ़ात के बाद हम पर अब कोई हक़ नहीं और न कोई एहसान और फ़ायदा है।

(अश्शहाबुस्साक़िब, स. 47)

ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ से फ़ैसला करके बताओ कि क्या इसी अन्दाज़ और तरीक़े से महबूबे ख़ुदा सय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को याद किया जाता है ? इस अन्दाज़ व तरीक़े से भाई और दोस्त व अहबाब यहाँ तक नौकर व गुलाम के लिये भी नहीं बोला जाता।

अब आप समझ गए होंगे कि वहाबी, देवबन्दी अल्लाह व रसूल जल्ला जला लहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की बारगाह के बड़े ही बे अदब और गुस्ताख़ हैं।

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी ज़िन्दा हैं

हज़रात ! नबिये रहमत व बरकत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को मुर्दा कहने वालों का ईमान व इस्लाम मर चुका है।

और हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह तआला की अता से ज़िन्दा थे ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा रहेंगे।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं -

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया कि -

إِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ

तर्जमा : बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि

अम्बियाए किराम के जिस्मों को खाए लिहाज़ा अल्लाह के नबी ज़िन्दा है, रिज़्क़ दिये जाते हैं। (अबू दाऊद शरीफ़, जि.1, स. 157, इब्ने माजह, स. 76, मिश्कात शरीफ़, स. 121)

रसूलुल्लाह बादे विसाल भी उम्मत को देख रहे हैं

(2) हदीस शरीफ़ : मशहूर महुद्दिस इमाम मुहम्मद इब्ने हाज मक्की और जलीलुल क़द्र मुहद्दिस इमाम अहमद क़स्तलानी रहमतुल्लाहे तआला अलैहिमा लिखते हैं कि -

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की हयात और वफ़ात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उन की हालतों, उनकी नियतों और उनके इरादों और उनके दिलों के ख़यालों को पहचानते हैं। यह सब हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ऐसा रोशन है जिसमें कुछ भी पोशीदगी नहीं।

(मुदख़ल, जि. 1, स. 215, शरह मवाहिब, जि. 8, स. 348)

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि -

پیغمبر خدا زندہ است بہ حقیقتِ حیاتِ دنیاوی

तर्जमा : रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम दुनियवी ज़िन्दगी की हक़ीक़त के साथ ज़िन्दा हैं।

(अशिअतुल लम्आत, जि. 1, स. 576)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रमतुल बारी फ़रमाते हैं -

यानी अम्बियाए किराम की दुनियवी ज़िन्दगी और विसाल के बाद की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं इसी लिये कहा जाता है।

कि औलियाए किराम मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाते हैं। (मिरक़ात, जि. 2, स. 212)

कौन कहता है कि मोमिन मर गया
क़ैद से छूटा वह अपने घर गया

ईमान वालों का अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह का एहसान हर मख़्लूक़ पर है

ऐ ईमान वालो ! महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल में सारा आलम पैदा किया गया इस लिये आलम के ज़र्रे ज़र्रे पर महबूबे ख़ुदा रसूले आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का एहसान अज़ीम है और अव्वलीन व आख़रीन ने इस अज़ीम एहसान को माना और तस्लीम किया है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

जलीलुल क़द्र मुहद्दिस हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहे अलैहि तहरीर फ़रमाते हैं कि -

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एहसान व महरबानी हर मख़लूक़ पर है ख़ास तौर पर हर मोमिन पर है। (मिरक़ात शरह मिश्कात, जि. 1, स. 64)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का एहसान हर मख़्लूक़ पर है ख़ास कर मोमिन पर। मगर रहीमो करीम नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का एहसान मोमिन व मुसलमान मानते हैं और काफ़िर व मुनाफ़िक़ नहीं मानते।

वहाबी का अक़ीदा कि नबी की क़ब्र बुत है

हज़रात ! अद्ल व इन्साफ़ की आँख से और ईमान की रोशनी में दिल को थामकर बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमाइये कि वहाबियों, नज्दियों के नज़दीक महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर, मज़ारे अक़दस की हक़ीक़त व हैसियत क्या है।

(1) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुक़द्दस हर लिहाज़ा से बुत है। (हाशिया शरहुस्सुदूर, स. 25, मतबुआ सऊदिया)

वहाबियों के इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी के पोते अब्दुर्रहमान नज्दी ने अपने दादा की किताब अत्तौहीद की शरह फ़तहुल मजीद में लिखा कि -

(2) नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का रोज़ा शिर्क व इल्हाद का बहुत बड़ा ज़रीआ है। (फ़तहुल मजीद, शरह किताबुत्तौहीद, स.209, मतबूआ मिस्र)

वहाबी का अक़ीदा कि नबी की क़ब्र को गिरा देना वाजिब है

वहाबियों के नवाब सिद्दीकुल हसन भोपाली के बेटे नूरुल हसन भोपाली ने लिखा कि :

(3) पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ब्र को गिरा देना वाजिब है। (उरफ़ुल जादी, स.61)

वहाबियों के इमाम मोहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब नज्दी ने लिखा कि :

(4) रसूलुल्लाह और अंबियाए किराम की ज़ियारत के लिये जाने वाला मुशरिक है। (फ़तहुल मजीद, शरह किताबुत्तौहीद, स.215)

वहाबियों का अक़ीदा

(5) क़स्दन क़ब्रे नबवी पर सलाम के लिये जाना मना है।

(हिदायतुल मुस्तफ़ीद, जि.1, स.811)

ग़ैर मुक़ल्लिदों के मुहद्दिस हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र या रोज़े की ज़ियारत के लिये जाना सराहतन मना है।

(सहीफ़ए अहले हदीस, कराची, स.23)

वहाबियों के मुज्तहिद नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली लिखते हैं कि :

(6) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्रे मुबारक के पास अपने लिये दुआ माँगना बिदअत है। (नहजुल मक़बूल फ़ार्सी, स.43)

ईमान वालों का अक़ीदा कि नबी की क़ब्र पर गुम्बद हदीस से साबित है

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाईयो ! इन्तिबाह होशियार !! यानी जिस हदीस शरीफ़ में यह हुक्म है कि पक्की क़ब्रों को गिरा दो इससे मुशरेकीन की क़ब्रों को गिराने का हुक्म है न कि अम्बिया व औलिया की क़ब्रों को गिराने का हुक्म दिया गया मगर वहाबी, देवबन्दी इस हदीस शरीफ़ को अम्बिया व औलिया की क़ब्रों और मज़ारों पर चस्पाँ करते नज़र आते हैं।

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के ज़ाहिरी ज़माने में भी अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और औलियाए इज़ाम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की क़ब्रों पर कुब्बे और गुम्बद बने हुए थे। मुलाहज़ा फ़रमाईये :

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के कुब्बे से टेक लगाकर हमको ख़िताब फ़रमाया तो इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में सिवाए मुसलमान आदमी के कोई शख़्स दाख़िल न होगा। (सही मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 117)

वली की क़ब्र पर गुम्बद का सुबूत

(2) तफ़्सीर की मुस्तनद व मोअतबर किताब, तफ़्सीर मदारिक शरीफ़ में लिखा है :

यानी जब औलिया अल्लाह अस्हाबे कहफ़ रज़ियल्लाहो अन्हुम का विसाल हुआ तो उनकी क़ब्र की ताज़ीम व तौक़ीर के लिये उन पर इमारत (कुब्बा व गुम्बद) वग़ैरह बनाया गया ताकि लोग बे अदबी से उनकी क़ब्रों पर पाँव न रखें और इस इमारत से उनकी आरामगाह की हिफ़ाज़त हो जाए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की हिफ़ाज़त (ताज़ीम व तौक़ीर) गुम्बद शरीफ़ से की गई।

(तफ़्सीरे मदारिक, जि.3, स.6, मतबूआ मिस्र)

प्यारे सुन्नी मुसलमान भाईयो ! हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अबुल अम्बिया हैं और अस्हाबे कहफ़ औलिया अल्लाह हैं जिनका ज़िक्र कुरआन मजीद में मौजूद है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अस्हाबे कहफ़ औलिया अल्लाह की क़ब्रों पर कुबा और गुम्बद बने हुए थे।

अगर क़ब्रों पर कुबा और गुम्बद का होना नाजाइज़ व हराम होता और बिदअत व शिर्क का ज़रीआ होता या अम्बियाए किराम की क़ब्रों के कुबे और गुम्बद अगर बुत होते (जैसाकि वहाबियों, नजदियों का अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम की क़ब्र हर लिहाज़ से

बुत है, उसे गिरा देना चाहिये) तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम यक़ीनन उसको गिरा देते या गिराने का हुक्म देते लेकिन न उनको गिराया और न गिराने का हुक्म दिया बल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र के कुब्बे और मज़ार से टेक लगाकर बैठे रहे और नेकों के मज़ार पर जाना और वहाँ बैठना सुन्नत बना दिया, जैसा कि हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर व साबित है।

हज़रात ! सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीसे पाक और मुस्तनद व मोअतबर तफ़्सीरे मदारिक शरीफ़ की रिवायत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि नबी और वली अलैहिमुस्सलाम की क़ब्र बुत नहीं होती बल्कि रहमत व बरकत के हुसूल का ज़रीआ होती है।

मगर वहाबियों, देवबन्दियों ने दिल खोलकर महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर, मज़ारे अक़दस की बुराई की और लिखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अनवर व अक़दस पर हाज़िर होना और सलाम करना और दुआ माँगना बिदअत व हराम बल्कि शिर्क है। अब अल्लाह तआला का फ़रमान और अपने मुशफ़िक़ व महरबान आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का इरशादे पाक मुलाहज़ा फ़रमाईये।

नबी ने बुलाया है क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के लिये

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِیْ

तर्जमा : जिस शख़्स ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उसके लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई। (दार कुतनी, सही इब्ने खुज़ेमा, मिश्कात, जज़्बुल कुलूब, मदारिजुन्नबुव्वत, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स.11)

हज़रात ! वहाबियों के अक़ीदे के मुताबिक़ क़ब्र शरीफ़ और गुम्बदे

ख़िज़रा अगर बुत है (मआज़ल्लाह) तो क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम बुत की ज़ियारत करने वाले शख़्स के लिये फ़रमा रहे हैं कि इसके लिये मेरी श़फ़ाअत वाजिब हो गई।

मआज़ल्लाह सद बार मआज़ल्लाह, अल्लाह तआला गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत नसीब फ़रमाए और उसी हाल में मौत नसीब करे। (आमीन सुम्मा आमीन)

मज़ारे अनवर की ज़ियारत ज़रीअए नजात है

हज़रात ! रहीम व करीम नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शफ़ाअत व बख़्शिश की ख़ातिर बारगाहे नूर में हाज़री दे और क़ब्रे अनवर की ज़ियारत करे जैसा कि इरशाद फ़रमाते हैं :

(2) हदीस शरीफ़ : जो शख़्स मेरी ज़ियारत को आए और इसके सिवा कोई निय्य न हो तो मुझ पर उसका हक़ हो गया कि मैं उसकी शफ़ाअत करूँ। (तबरानी, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 13)

(3) हदीस शरीफ़ : जिस शख़्स ने इरादा करके मेरी ज़ियारत की वह क़ियामत के दिन मेरे पड़ोस में होगा।

(मिश्कात शरीफ़, जज़्बुल कुलूब, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स.24)

बादे विसाल भी मज़ारे अक़्दस से नजात का परवाना मिलता है

(4) हज़रत मौला अली शैरे ख़ुदा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मन्क़ूल है कि जब हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का विसाल शरीफ़ हुआ, हम दफ़्न से फ़ारिग़ हुए तो एक बद्दु (देहाती) हाज़िर हुए क़ब्रे अनव पर पहुँचकर गिर गए यानी क़ब्रे नूर से लिपट कर रोते हुए अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैका व आलिका व सल्लम आपने जो इरशाद फ़रमाया वह हमने सुना और जो अल्लाह तआला की जानिब से आपको पहुँचा था और आपने उसको महफ़ूज़ फ़रमाया था, उस को हमने महफ़ूज़ किया, उस चीज़ में जो अल्लाह तआला ने नाज़िल की (यानी कुरआने मजीद) इसमें अल्लाह तआला का फ़रमान है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا

तर्जमा : और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाएं तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबह कुबूल करने वाला महरबान पाएँ। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 5, रुकूअ् 6)

इसके बाद उस बद्दु यानी (देहाती) ने कहाकि बेशक मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है और अब मैं आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के पास मग़फ़िरत व बख़्शिश तलब करने हाज़िर हुआ हुँ। इस पर क़ब्रे अनवर व अक़दस से आवाज़ आई कि बेशक तुम्हारी मग़फ़िरत हो गई।

हज़रात ! कुरआने करीम में अल्लाह तआला के इरशादे पाक से साफ़ साफ़ ज़ाहिर और साबित है कि ख़ुद अल्लाह तआला ने गुनाह व ख़ता की मग़फ़िरत और मुराद व मक़सूद के हुसूल के लिये बन्दों को महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर व मज़ारे अक़दस पर हाज़री और ज़ियारत का हुक्म फ़रमाया है और जैसा कि हज़रत मौला अली की रिवायत और बद्दु के वाक़िए से भी पता चलता है।

मोमिन दुआ माँगते वक़्त मुँह क़ब्रे अनवर की तरफ़ करे

आशिक़े रसूल हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि "जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िर हो तो दुआ के वक़्त मुँह क़ब्र शरीफ़ की तरफ़ करे और पीठ क़िब्ले की जानिब और फिर दुआ माँगे। (शरहे मवाहिब)

हदीस शरीफ़ : हज़रत नाफ़ेअ से रिवायत है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा जब सफ़र से वापस आते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर व अक़दस पर हाज़री देते और

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَبَا بَکْرٍ
اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَبَتَاہُ

अर्ज़ करते (मुसन्नसफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, जि.3, स.576, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा, जि.3, स.28, बैहिक़ी, अस्सुननुल कुबरा, जि.5, स.245)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम और अइम्मए दीन व मोहद्देसीन के अक़्वाल व अहवाल से रोज़ रोशन से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हो गया कि मुशफ़िक़ व महरबान नबी, रहीमो करीम रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की क़ब्रे अनवर, मज़ारे अक़दस पर हाज़री देना और सलाम पैश करना और दुआ माँगना नाजाइज़ व हराम और बिदअत व शिर्क नहीं बल्कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की आदत व सुन्नत है।

और आज तक उसी आदत व सुन्नत पर तमाम अइम्मए किराम, मोहद्दिसीने इज़ाम व औलिया व उलमा और जुम्ला मोमिन व मुसलमान अमल करते रहे हैं और क़ियामत तक अमल करते रहेंगे इंशाअल्लाहु तआला।

लिहाज़ा अंग्रेज़ों के ज़र ख़रीद गुलाम वहाबी, देवबन्दी वग़ैरह के झूटे और बातिल अक़ीदे से बचते हुए सहाबए किराम से आज तक के बुज़ुर्गों की आदत व सुन्नत का दामन मज़बूती के साथ थामे रखो, इसी में भलाई और ईमान व इस्लाम की सलामती है।

आशिके रसूल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़ रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले

हज़रात ! मुलाहज़ा फ़रमाईये :

1) अल्लामा इब्ने हम्माम ने फ़तहुल क़दीर, जि.3, स.179 पर

2) अल्लामा इब्ने कुदामा हंबली ने अल काफ़ी, जि.1, स.457 पर

3) अल्लामा तहावी ने तहावी हाशिया अला मराक़िल फ़लाह, जि.1, स.486 पर

4) अल्लामा इब्ने आबेदीन शामी ने हाशिया इब्ने आबेदीन, जि.2, स.627 पर लिखा कि हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के मज़ारे अक़दस व अनवर की हाज़री और ज़ियारत महबूब व मुस्तहसन और बाइसे रहमत व बरकत अमल है और इस पर तमाम बुज़र्गो का इत्तिफ़ाक़ है।

वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा कि अंबिया ऐबदार होते हैं

ऐ ईमान वालो ! ईमान व इन्साफ़ के साथ आगे पढ़िये और फ़ैसला कीजिये कि अहले हदीस कहलाने वाले और वहाबी, देवन्बदी, तब्लीग़ी अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की बारगाह के कितने बे अदब और गुस्ताख़ हैं और उनका अक़ीदा खुले हुए काफ़िरों से भी बद तर है।

मुलाहज़ा फ़रमाईये :

अहले हदीस कहलाने वालों के पैशवा मौलवी रफ़ीक़ ख़ाँ पिसरवी लिखते हैं कि

(1) अंबिया अलैहिमुस्सलाम ऐबदार होते हैं (इस्लाहे अक़ाइद, स.154)

हज़रात ! देवबन्दियों की मोअतबर किताब अस्दकुर रुया में मौलवी अशरफ़ अली थानवी की झूटी शान को ज़ाहिर करने के लिये लिखा है कि

(2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जिस्मे मुबारक हज़रत मौलाना अशरफ़ अली जैसा था। (अस्दकुर रुया, स.5)

(3) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे मौलाना अशरफ़ अली थानवी की शक्ल में है। (अस्दकुर रुया, स.25)

(4) हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शक्ल ऐसी है जैसे हमारे मौलाना थानवी की। (अस्दकुर रुया, स.37)

(मआज़ल्लाह सद बार मआज़ल्लाह)

हज़रात ! वहाबियों, देवबन्दियों और तब्लीग़ियों के पैशवा मौलवी अशरफ़ अली थानवी वह बद बख़्त शख़्स है जिसने अपनी किताब बहिश्ती ज़ेवर के स.45 पर लिखा है कि अब्दुन्नबी नाम रखना कुफ़्र व शिर्क है और यह कहना कि ख़ुदा व रसूल चाहे तो फ़लाँ काम हो जाएगा कुफ़्र व शिर्क है। वहाबियों , देवबन्दियों ने ऐसे गुस्ताख़े रसूल काफ़िर व मुर्तद मौलवी अशरफ़ अली थानवी के जिस्म को और उसकी शक्ल को महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के जिस्मे नूर और चेहरए अनवर की तरह लिख दिया जैसा कि हवाला गुज़रा।

मौलवी अशरफ़ अली थानवी को अंग्रेज़ छै सौ रूपया माहाना तंख़्वाह देते थे

हज़रात ! मौलवी अशरफ़ अली थानवी वह बद दीन और गुमराह और काफ़िर व मुरतद शख़्स है जिसने अंग्रेज़ों के हाथ पर अपने दीन व ईमान को बेचा और इस सौदे के बदले में अंग्रेज़, हुकूमत वहाबियों , देवबन्दियों के पैशवा मौलवी अशरफ़ अली थानवी को माहाना छै सौ रूपये तन्ख़्वाह देती थी। हवाला मुलाहज़ा फ़रमाईये।

देवबन्दियों के मश्हूर मौलवी शब्बीर अहमद उस्मानी लिखते हैं कि :

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी हमारे मुसल्लम बुज़ुर्ग थे उनको (अंग्रेज़) हुकूमत की जानिब से छै सौ रूपया हर महीना दिया जाता था और तब्लीग़ी जमाअत को भी, (अंग्रेज़) हुकूमत की जानिब से हाजी रशीद अहमद गंगोही के ज़रीए रूपया मिलता था। (मकालेमतुस्सदरैन, स.8–9)

वहाबी, देवबन्दी जमाअते इस्लामी की गुस्ताख़ियाँ

मदरसा देवबन्द के बानी मौलवी क़ासिम नानोतवी लिखते हैं कि

(5) हर क़िस्म के झूट से नबी को मासूम होना ज़रूरी नहीं।

(तस्फ़ियतुल अक़ाइद, स.25)

ग़ैर मुक़ल्लिदों अहले हदीस कहलाने वालों के पैशवा हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रोपड़ी लिखते हैं कि

(6) नबिये पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरों का क़र्ज़

उतारने के लिये हराम माल को भी इस्तेमाल में लाते रहे हैं।

(बकरा देवी, स.31)

ऐ ईमान वालो ! कलेजा थाम लीजिये और आगे बढ़िये–

वह क़िस्से और होंगे जिनको सुनकर नींद आती है
तड़प जाओगे काँप उठोगे सुनकर दास्तान उनकी

ग़ैर मुक़ल्लिदों के मौलवी फ़क़ीरुल्लाह मदरासी, अहले हदीस कहलाने वालों के मुहद्दिस व मुफ़्ती, मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी का अक़ीदा लिखते हैं कि

(7) सलफ़े सालेहीन व अइम्मए दीन बल्कि सैयिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुर्दा खोर थे। (तफ़्सीरुस्सलफ़, स.17)

अहले हदीस कहलाने वालों के इमाम व पैशवा इब्ने तेमिया लिखते हैं कि:

(8) शैतान, इब्राहीम व मसीहो ख़िज़र और मुहम्मद अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की शक्ल में लोगों के सामने आता है और उनकी मदद करता है। (किताबुल वसीला, स.41)

जमाअते इस्लामी के बानी व अमीर अबुल आला मोदूदी लिखते हैं कि

(9) अंबिया बशर ही हैं राए और फ़ैसला में भी ग़लती करते थे हत्ताकि उनसे क़ुसूर भी हो जाते थे और उनको सज़ा भी दी जाती थी।

(तर्जमानुल क़ुरआन, स.158, मई 1955)

जमाअते इस्लामी के बानी और अमीर अबुल आला मोदूदी लिखते हैं कि:

(1) हज़रत नूह अलैहिस्सलाम में जाहिलियत का जज़्बा था।

(तफ़्सीर तफ़्हीमुल क़ुरआन, जि.2)

(2) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से भी एक बहुत बड़ा गुनाह हो गया था। (रसाइलो मसाइल, स.27)

(3) हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम एक जल्द बाज़ और ग़ैर मुदब्बिर थे। (तफ़्सीर तफ़्हीमुल क़ुरआन, जि.3)

(4) हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम में ख़्वाहिशे नफ़्स का दख़ल था

(तफ़्सीर तफ़्हीमुल क़ुरआन, जि.4)

(5) हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने फ़रीज़ए रिसालत में कोताहियाँ की थीं। (तफ़्सीर तफ़्हीमुल कुरआन, जि.2)

ऐ ईमान वालो ! दिन के उजाले से ज़्यादा वहाबियों, देवबन्दियों, तब्लिग़ियों का कुफ्री अक़ीदा ज़ाहिर और साबित हो गया और मालूम हो गया कि वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी किस क़दर बे अदब और ऐबदार व हराम ख़ोर व निडर हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को ऐबदार और मुर्दार ख़ोर तक लिख दिया और यह भी लिखा कि शैतान आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की शक्ल में आता है और यह भी लिखा कि मौलवी अशरफ़ अली थानवी की शक्ल व सूरत आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शक्ल व सूरत की तरह थी। मआज़ल्लाह

ईमान वालों का अक़ीदा कि अंबिया बे ऐब और बे मिसाल होते हैं

हज़रात ! हज़रत इमाम बुख़ारी और हज़रत इमाम मुस्लिम और अइम्मा व मोहद्देसीन अलैहिर्रहमतो वर्रिज़्वान ने बहुत ही वाज़ेह अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी, हज़रत मौला अली और सहाबए किराम रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को अपनी तरह और अपने को हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की तरह नहीं बल्कि आप सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को बे मिस्ल और बे नज़ीर जानते थे।

हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाईये।

(1) हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम ने सहाबए किराम से मुख़ातब होकर फ़रमाया : أَيُّكُمْ مِثْلِي

तर्जमा : यानी तुम लोगों में मेरी तरह कौन है ?

(बुखारी शरीफ़, जि.1, स.263, मुस्लिम शरीफ, स.352,
मिश्कात शरीफ़, स.175)

और इसी तरह की दूसरी रिवायत हज़रत इमाम बुखारी और हज़रत इमाम मुस्लिम ने नक़्ल की है।

(2) हदीस शरीफ़ : اِنِّی لَسْتُ مِثْلَکُمْ

तर्जमा : यानी मैं तुम्हारी तरह हरगेज़ नहीं हूँ।

(बुखारी शरीफ़, जि.2, स.1084, मुस्लिम शरीफ़, स.351)

हज़रात ! सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की हदीस से साफ़ तौर पर ज़ाहिर औ साबित हो गया कि जब सहाबए किराम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम के मिस्ल नहीं हैं तो शैतान और मौलवी अशरफ़ अली थानवी किस तरह उनके जैसा हो सकते हैं।

मुलाहज़ा फ़रमाईये :

हमारे प्यारे आक़ा बे मिस्ल व ला जवाब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम फ़रमाते हैं :

مَنْ رَّاٰنِیْ فَقَدْ رَاٰی الْحَقَّ فَاِنَّ الشَّیْطٰنَ لَا یَتَمَثَّلُ بِیْ

तर्जमा : जिसने मुझे देखा उसने हक़ देखा कि शैतान मेरी सूरत नहीं बन सकता। (अल मीलादुन्नबवियह, स.10, इमाम अहमद रज़ा)

नबी को अपनी तरह कहना काफ़िरों का तरीक़ा है

हज़रात ! अम्बियाए किराम को अपने जैसा बशर कहने वाले कुफ़्फ़ार थे हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अल्लाह तआला फ़रमाता है :

आयत नम्बर 1

فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰکَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا

तर्जमा : यानी तो उसकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर हुए बोले हम तो तुम्हें अपने ही जैसा आदमी देखते हैं। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 12, रुकू 3)

आयत नम्बर 2 : قَالُوْا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तर्जमा : बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी।

(कन्ज़ुल ईमान, पारा 22, रुकू 18)

आयत नम्बर 3 : وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तर्जमा : तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी।

(कन्जुल ईमान, पारा 19, रुकू 12)

यानी काफ़िरों ने हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम हमारे ही तरह बशर हो।

आयत नम्बर 4, अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا

तर्जमा : काफ़िरों ने हज़रत शोएब अलैहिस्सलाम से कहा कि तुम हमारे ही मिस्ल बशर हो। (कन्जुल ईमान, पारा 19, रुकू 14)

हज़रात ! इन आयात से साफ़ साफ़ मालूम हो गया कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को अपनी तरह बशर कहना कुफ्र है और यह तरीक़ा काफ़िरों का है।

ऐ ईमान वालो ! महबूबे खुदा रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम को मुरदार ख़ौर और ऐबदार कहना और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को गुनाहगार और जल्द बाज़ ठहराना और हज़रत नूह अलैहिस्सलाम में जाहिलियत का जज़्बा साबित करना और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम में ख्वाहिशे नफ़्स का दख़ल था यह कहना और हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने फ़रीज़ए रिसालत में कोताहियां की थीं, यह कहना। यक़ीनन अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की बारगाह में खुली हुई बे अदबी और गुस्ताख़ी है जो बेशक कुफ्र है।

मोमिन होने के लिये नबी को हर ऐब से पाक मानना वाजिब है

हज़रात ! मोमिन व मुसलमान होने के लिये अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को हर ऐब गुनाह से पाक और मासूम मानना वाजिब है।

हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये :

आशिक़े रसूल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं कि -

तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को बरहक़ जानना और

उन की ताज़ीम व तौक़ीर करना और उन की बा बरकत ज़ात को कमी और कोताही के ऐब से पाक समझना और उन की ज़ाते करीम को क़ब्ले नुबुव्वत और बादे नुबुव्वत हर क़िस्म के छोटे और बड़े तमाम गुनाहों से मासूम जानना वाजिब है और यही क़ौल मुख़्तार है।

(अशअतुल लम्आत, जि. 1, स. 40)

सहाबा हुज़ूर को हर ऐब से पाक जानते थे

हज़रत हस्सान बिन साबित अन्सारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो सहाबा-ए-किराम की मौजूदगी में हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के रूबरू हर ऐब से पाक, रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम की शाने पाक में अर्ज़ करते हैं। خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ كَأَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَاءُ

या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहो तआला अलैका व आलिका व सल्लम आप हर क़िस्म के ऐब से पाक व साफ़ पैदा किये गए हैं गोया आप को आप की मर्ज़ी के मुताबिक़ पैदा किया गया।

(दीवाने हस्सान बिन साबित, स. 21)

हज़रात ! हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शेअर से रोज़ रोशन से ज़्यादा रोशन और ज़ाहिर हुआ कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम हर क़िस्म की कमी और ऐब से पाक और मुबर्रा हैं।

पाक लोगों को पाक और नापाक लोगों को नापाक

हज़रात ! पाक चीज़ें पाकों के लिये और नापाक चीज़ें नापाकों के लिये हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के मौलवी अब्दुस्सत्तार देहलवी लिखते हैं कि-

(1) रस्मी मुसलमान, या रसूलल्लाह का नअ़रा लगाने वाले क़स्साब का ज़िबह किया हुआ जानवर का गोश्त नहीं खाना चाहिये।

(सहीफ़ए अहले हदीस, कराची, स. 23 यकुम सफ़र, 1374 हि.)

हज़रात ! वहाबियों ग़ैर मुक़ल्लिदों ने या रसूलल्लाह कहने वाले सचे मोमिन व मुसलमान का ज़िबह किया हुआ जानवर का गोश्त खाने से बचने की तालीम दी है मगर अहले हदीस कहलाने वाले वहाबियों के बुज़ुर्ग नवाब व हीदुज़्ज़मां लिखते हैं कि -

(2) काफ़िर के हाथ का ज़िबह किया हुआ जानवर हलाल है।

(नुज़्ज़ेलुल अबरार,स. 78, जि. 3, मतबूआ बनारस)

वहाबियों, देवबन्दियों के पीरो मुर्शिद मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि -

(3) सही रिवायत के साथ भी मुहर्रम में शहादते इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का ज़िक्र करना, सबील लगाना और शरबत के लिये चन्दा देना, बच्चों को दूध पिलाना सब हराम है।

(फ़तावा रशीदिया हिस्सा सौम, 114)

हज़रात ! अल्लाह तआला के दीन पर घरबार और कुन्बा, ख़ानदान कुरबान करने वाले और अपना ख़ून देकर इस्लाम को बचाने वाले महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के नवासे, मौला अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के शहज़ादे, सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा के दिल के चैन सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की शहादत का ज़िक्र कर और उन के ईसाले सवाब के लिये पानी और दूध पिलाने को वहाबियों, देवबन्यिों ने हराम कहा और लिखा।

हज़रात ! **कलेजा** थाम लीजिये, आगे देखिये और पढ़िये।

वहाबियों, देवबन्दियों के पीर मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि -

(4) हिन्दुओं के त्यौहार, होली या दीवाली वग़ैरह की पूरी, कचोरी वग़ैरह खाना मुसलमानों के लिये दुरुस्त और जाइज़ है।

(फ़तावा रशीदिया, जि.2, स. 107)

हज़रात ! अल्लाह तआला पाक, उस का प्यारा रसूले पाक, इमाम हुसैन पाक, उनके नाम का खिचड़ा और सबील और उन की शहादत का

ज़िक्रे पाक और अल्लाह तआल पाकों को पसन्द फ़रमाता है।

हिन्दू मुशरिक, नापाक, उन के त्यौहार नापाक मगर वहाबी देवब दी होली और दीवाली की कचोरी, पूरी और हर खाने को जाइज और दुरुस्त कह रहे हैं लेकिन सय्यदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की तरफ़ मन्सूब पानी और दूध के शरबत को हराम व नाजाइज़ ठहरा रहे हैं।

तो पता चला कि वहाबियों, देवबन्दियों को काफ़िरों, मुशरिकों से निस्बत है और सुन्नी मुसलमानों को जन्नती नो जवानों के सरदार हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लहो तआला अन्हो से निस्बत है।

वहाबियों का अक़ीदा कि कव्वा खाना सवाब है

वहाबियों देवबन्दियों के पीर व मौलवी रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं कि -

(1) कव्वा खाना जाइज़ है बल्कि सवाब है।

(फ़तावा रशीदिया, जि. 2, स. 145)

हज़रात ! वहाबियों, देवबन्दियों को किस क़द्र महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम से बुग़्ज़ व दुश्मनी है कि जो शख़्स या रसूलल्लाह का नअ़रा लगाता है तो उस मोमिन व मुसलमान का ज़िबह किया हुआ जानवर का गोश्त नहीं खाना चाहिये मगर काफ़िर के हाथ का ज़िबह किया हुआ जानवर का गोश्त हलाल व जाइज़ लिखा।

हज़रात ! शरीअत का मस्अला है कि जो शख़्स जानवर को ज़िबह करे उस शख़्स को मुसलमान होना शर्त है। काफ़िर व मुर्तद का ज़िबह किया हुआ जानवर हराम व मुरदार है।

(फ़तावा आलमगीरी बहवाला बहारे शरीअत : हिस्सा, 15, स. 19)

वहाबियों का धोका, ग़लत मतलब बयान करना

हज़रात ! वहाबी, देवबन्दी क़ुरआन शरीफ़ का ग़लत तर्जमा और मफ़हूम व मतलूब बयान कर के लोगों को गुमराह करते हैं जैसे

आयत : अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللهِ

तर्जमा : और वह जानवर जो ग़ैर ख़ुदा का नाम ले कर ज़िबह किया गया। (कन्ज़ुल ईमान, पारा 2, रुकू 5)

इस आयते करीमा का मतलब यह है कि ज़िबह के वक़्त अल्लाह तआला के नाम की जगह किसी ग़ैर ख़ुदा यानी किसी पीर व बुज़ुर्ग वग़ैरह का नाम लिया जाए तो उस वक़्त ज़बीहा यक़ीनन हरीम हो जाएगा।

अल्हम्दु लिल्लाह ! सुन्नी मुसलमान जानवर को ज़िबह करते वक़्त बिस्मिल्लाहि, अल्लाहु अकबर ही पढ़ता है जिस से ज़िबह किया हुआ जानवर हलाल हो जाता है और जानवर के ज़िबह हो जाने के बाद उस का सवाब किसी बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र किया जाता है जो अहले सुन्नत के नज़दीक बहुत बड़ा बरकत व रहमत का ज़रीआ है। जिस तरह कुरबानी और अक़ीक़ा में दुआ पढ़ी जाती है और कुरबानी में जानवर ज़िबह हो जाने के बाद उन का नाम लिया जाता है जिस की तरफ़ से कुरबानी की गई है और कुरबानी में हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नाम भी लिये जाते हैं जो फ़िक़ह की मशहूर व मुस्तनद किताब हिदाया वग़ैरह में लिखा हुआ है।

ऐ ईमान वालो ! वहाबियों, देवबन्दियों के म ज़हब में कव्वा खाना सिर्फ़ हलाल नहीं बल्कि सवाब भी है तो उलमाए देवबन्द को चाहिये कि ख़ुद कव्वा खाएं और अपनी जमाअत वालों को भी कव्वा खिलाएं ताकि पेट भी भरता रहे और सवाब भी मिलता रहे।

अल्लाह तआला उन काले कव्वे वालों से हम सुन्नियों को महफ़ूज़ व मामून रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

किसी ने क्या अच्छी बात कही है :

ख़ुदा जब दीन लेता है
तो अक़्लें छीन लेता है

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो का फ़तवा

शहज़ादए आला हज़रत ताज्दारे अहले सुन्नत कुतुबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा क़ादरी नूरी बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फ़रमाते हैं।

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के इरशादे पाक का खुलासा यह है कि मुसलमान कहलाने वालों में बद मज़हब (बद अक़ीदा) सब से ज़्यादा बुरे हैं। उन से ख़ुश अख़लाक़ी के साथ पेश आना हर गिज़ जाइज़ नहीं, इस लिये कि अल्लाह उन को दुश्मन रखता है और उन (बद अक़ीदा लोगों) की कोई इबादत कुबूल नहीं फ़रमाता है। चाहे फ़र्ज़ हो या नफ़्ल, वह लोग (बद मज़हब) जहन्नमियों के कुत्ते हैं उन की इज़्ज़त करना मज़हबे इस्लाम के ढाने पर मदद करना है, उन (बद अक़ीदों) को हर तरह से दूर रखना लाज़िम है और उन से किसी क़िस्म का मज़हबी तअल्लुक़ रखना जाइज़ नहीं और उन (बद अक़ीदों) से सलाम करना, उनके साथ उठना, बैठना, खाना, पीना जाइज़ नहीं और उन बद अक़ीदों के यहाँ शादी ब्याह करना दुरुस्त नहीं।

मुसलमानो ! अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के दुश्मनों वहाबियों (देवबन्दियों, तब्लीग़ियों) मुर्तदों का मज़हबी बाएकाट करना, उन से दूर रहना और उन के साथ सख़्ती से पेश आना बद अख़लाक़ी नहीं है बल्कि ख़ुल्क़े अज़ीम से है। इसलिये कि अल्लाह तआला और उसके महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हम को यही हुक्म फ़रमाया है और हमारे बुज़ुर्गों ने यही सबक़ दिया है कि बद मज़हबों, वहाबियों, देवबन्दियों तब्लीग़ियों से दूर रहो और उन के यहाँ शादी ब्याह न करो।

मगर सद अफ़सोस ! आज कल सुन्नी मुसलमान कहलाने वाले अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम व बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों के यहाँ शादी ब्याह करने में कोई रुकावट महसूस नहीं करते।

और जब मना किया जाता है तो बाज़ जाहिल जो अपने आप को मज़बूत सुन्नी समझते हैं वह यह कहते नज़र आते हैं कि अब वह ज़माना नहीं रहा कि उन (बद मज़हबों वहाबियों, देवबन्दियों) के यहाँ शादी न किया जाए। नऊज़ुबिल्लाह

हालाँकि अल्लाह तआला और उसके महबूब रसूल सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम और औलियाए किराम व बुज़ुर्गाने दीन की शान में गुस्ताख़ी करने वालों के यहाँ शादी करना दुरुस्त ही नहीं, उनके यहाँ उन के साथ शादी करना ज़िना कारी का दरवाज़ा खोलना है इस लिये कि मुर्तद के साथ निकाह जाइज ही नहीं। (फ़तावा आलमगीरी)

और कुछ गंवार यह कहते हैं कि लड़की लाने में कोई हरज नहीं अलबत्ता उन को लड़की देना ग़लत है। जब कि लड़की हो या लड़का किसी का रिश्ता उन से जाइज़ नहीं।

हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि उलमाए अहले सुन्नत पर लाज़िम है कि वह अवामे अहले सुन्नत को बद मज़हब व बद अक़ीदा वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी के यहाँ शादी ब्याह करने से सख़्त मना करें।

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि हम सब सुन्नी मुसलमानों को बद मज़हब, वहाबियों से हमेशा दूर रखे और ईमान पर खातमा नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

(हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म, वहाबिया की तक़िया बाज़ी, स. 14,15)

ऐ ईमान वालो ! यक़ीन जान लो कि हर नेअ़मत से बड़ी नेअ़मत ईमान है और हर फ़र्ज से बड़ा और अहम फ़र्ज ईमान की मुहाफ़िज़त है।

तो ग़ौर करिये कि अगर कोई शख़्स आप के मां, बाप को गाली दे दे तो क्या आप उस शख़्स से रिश्ता नाता रखेंगे ? हर गिज़ नहीं रखेंगे।

अब ईमान के साथ फ़ैसला कीजिये कि क्या आप की नज़र में महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम का मुकाम व मरतबा मां, बाप के बराबर भी नहीं है। मआज़ल्लाह सद बार मआज़ल्लाह।

यक़ीन जान लीजिये कि मोमिन की शान तो यह है कि मां, बाप की तमाम इज़्ज़त व अज़मत अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के क़दमे नाज़ पर कुरबान कर के फ़ख़्र महसूस करता है।

तो मालूम हुआ कि जब माँ, बाप के दुश्मन और गुस्ताख़ से रिश्ता और तअल्लुक़ रखना वफ़ादार औलाद को गवारा नहीं हो सकता है तो जाने ईमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम के दुश्मन व गुस्ताख़ से एक वफ़ादार उम्मती भी किसी क़िस्म का रिश्ता और तअल्लुक़ रखना गवारा नहीं कर सकता है।

मुहम्मद की गुलामी है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौहीद में आबाद होने की

की मुहम्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ क्या चीज़ है लोहो क़लम तेरे हैं

(सल्लल्लाहो तआला अलैहि व आलिही व सल्लम)

अल्लाह तआला हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा को मोमिन बना कर ज़िन्दा रखे और मोमिन बना कर इस दुनिया से उठाए। आमीन सुम्मा आमीन।

अनवार अहमद क़ादरी

माख़ज़ व मराजेअ्

1)	कुरआने करीम	
2)	तफ़्सीरे कबीर	इमाम मोहम्मद फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
3)	तफ़्सीरे मदारिक	इमाम अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन महमूद नसफ़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
4)	तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर	इमाम जलालुद्दीन स्यूती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
5)	तफ़्सीर इब्ने जोज़ी	अबुल फ़रह अब्दुर्रहमान बिन अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
6)	तफ़्सीर रूहुल मआनी	इमाम महमूद आलूसी बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
7)	तफ़्सीरे तबरी	अबू जाफ़र मोहम्मद बिन जरीरुत्तबरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
8)	सही बुख़ारी	इमाम मोहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
9)	सही मुस्लिम	इमाम अबुल हुसैन मुस्लिम बिन हज्जाज क़शीरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
10)	तिर्मिज़ी	इमाम मो. बिन ईसा तिर्मिज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
11)	अबू दाऊद	इमाम अबू दाऊद सुलैमान बिन अशअस सजिस्तानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
12)	नसाई	इमाम अबू अब्दुर्रहमान अहमद बिन शोएब नसाई रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
13)	इब्ने माजह	इमाम अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन यज़ीद बिन माजह क़ज़वैनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
14)	मिश्कातुल मसाबीह	शैख़ इमाम वलियुद्दीन मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़तीब तबरेज़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
15)	बैहिक़ी	इमाम अबू बकर अहमद बिन हुसैन बैहिक़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
16)	दार कुतनी	इमाम अबुल हसन अली बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
17)	तहावी	इमाम अबू जाफ़र अहमद बिन मोहम्मद अज़्दी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
18)	तबरानी	इमाम अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अहमद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
19)	हाकिम	इमाम अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन मोहम्मद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
20)	मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़	इमाम अबू बकर बिन होमाम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

21)	मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा	इमाम अब्दुल्लाह बिन अबी शैबा अल अब्सी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
22)	सही इब्ने ख़ुज़ैमा	इमाम अबू बकर मोहम्मद बिन इस्हाक़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
23)	अस्सुननुल कुबरा	इमाम अबू बकर अहमद बिन हुसैन बैहिक़ी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
24)	ऐनी शरह बुख़ारी	अल्लामा बदरुद्दीन महमूद ऐनी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
25)	मिरक़ात शरह मिश्कात	मुल्ला अली क़ारी बिन सुल्तान मोहम्मद हरवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
26)	मदख़ल	शैख़ इमाम इब्नुल्हाज रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
27)	फ़तहुल क़दीर	शैख़ कमालुद्दीन मोहम्मद बिन अब्दुल वाहिद अश्शहीर ब इब्नुल हम्माम रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
28)	अल काफ़ी	अल्लामा इब्ने कुदामा हम्बली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
29)	ज़रक़ानी	अल्लामा मोहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी ज़रक़ानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
30)	अल मवाहिबुल लदुन्नियह	इमाम अहमद बिन मोहम्मद क़स्तलानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
31)	शिफ़ा शरीफ़	अल्लामा क़ाज़ी अयाज़ बिन मूसा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
32)	मदारेजुन्नुबुव्वत	शैख़ अ. हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
33)	नसीमुर्रियाज़	शैख़ शहाबुद्दीन अहमद बिन मोहम्मद बिन उमर ख़फ़्फ़ाजी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
34)	अल अनवारुल मोहम्मदिया	अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल निब्हानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
35)	ख़साइसे कुबरा	इमाम अबुल फ़ज़्ल जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अबी बकर स्यूती रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
36)	अद्दुररुस्सुन्नियह	अल्लामा सैयद अहमद ज़ैनी दहलान शाफ़ेई मक्की रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
37)	हुज्जतुल्लाहु अलल आलमीन	अल्लामा यूसुफ़ बिन इस्माईल निब्हानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
38)	अश्अतुल्लम्आत	शैख़ अ. हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
39)	ज़ियाउन्नबी	अल्लामा पीर मोहम्मद करम शाह अज़हरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
40)	दीवाने हस्सान	हज़रत हस्सान बिन साबित अन्सारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
41)	मतालेउल मुसर्रात	शैख़ अल्लामा मोहम्मद मेहदी फ़ासी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो

42)	रद्दुल मोहतार	शैख सय्यद मोहम्मद अमीनुश्शहीर ब इब्ने आबेदीन शामी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
43)	फ़तावा हदीसियह	अल्लामा शहाबुद्दीन बिन हजर मक्की रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
44)	जज़्बुल कुलूब	शैख अ. हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
45)	शिफ़ाउस्सिक़ाम	अल्लामा तक़ीयुद्दीन सुब्की रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
46)	दलाइलुल ख़ैरात	शैख़ अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन सुलैमान अल जज़ोली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
47)	गुनयतुत्तालेबीन	शैख़ अब्दुल क़ादिर मोहयुद्दीन जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
48)	अनवारुल इन्तिबाह	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
49)	मुनीरुल ऐन फ़ी तक़बीलिल इब्हामैन	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
50)	इंबाउल मुस्तफ़ा बेहाले सिर व इख़्फ़ा	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
51)	ख़ालेसुल एतिक़ाद	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
52)	अल अम्नो वल उला	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
53)	हदाइक़े बख़्शिश	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
54)	बहारे शरीअत	सदरुश्शरीआ शैख़ मोहम्मद अमजद अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
55)	वहाबिया की तक़िया बाज़ी	अल्लामा शैख़ मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान (मुफ़्तिये आज़मे हिन्द) रज़ियल्लाहो तआला अन्हो
56)	अहले सुन्नत की आवाज़ 2008	खुसूसी शुमारह, मारेहरा मुतह्हरा

कुतुबे वहाबिया देवबन्दिया

1)	तक़वियतुल ईमान	मौलवी इस्माईल देहलवी
2)	रिसाला यकरोज़ी	मौलवी इस्माईल देहलवी
3)	फ़तावा रशीदियह	मौलवी रशीद अहमद गंगोही
4)	अश्शहाबुस्साक़िब	मौलवी हुसैन अहमद मदनी
5)	बुरहानुल हक़	मौलवी अहमद दीन
6)	बराहीने क़ातिआ	मौलवी ख़लील अहमद अंबेठवी
7)	इस्लाहे अक़ाइद	मौलवी रफ़ीक़ ख़ाँ पिसरवी
8)	तफ़्हीमात	अबुल आला मौदूदी
9)	फ़तावा नजीरिया	मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
10)	तहज़ीरुन्नास	मौलवी क़ासिम नानोतवी
11)	बहिश्ती ज़ेवर	मौलवी अशरफ़ अली थानवी
12)	बुलग़तुल जीरान	मौलवी हुसैन अली देवबन्दी
13)	तोहफ़ए वहाबिया	मौलवी इस्माईल ग़ज़नवी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
14)	किताबुल वसीला	ग़ैर मुक़ल्लिदों के इमाम इब्ने तैमिया
15)	सिमाये मोता	मौलवी अब्दुल्लाह रोपड़ी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
16)	शरहुस्सुदूर	क़ाज़ी मोहम्मद बिन अली शोकानी
17)	फ़तहुल मजीद शरह किताबुत्तौहीद	अब्दुर्रहमान नज्दी
18)	उरफ़ुल जादी	नूरुल हसन भोपाली
19)	सहीफ़ए अहले हदीस कराची	हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रोपड़ी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
20)	नहजुल मक़बूल	नवाब सिद्दीक़ हसन भोपाली (ग़ैर मुक़ल्लिद)
21)	मकालेमतुस्सदरैन	मौलवी शब्बीर अहमद उस्मानी (देवबन्दी)
22)	तफ़्सीरुस्सलफ़	मौलवी फ़क़ीरुल्लाह मद्रासी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
23)	तस्फ़ियतुल अक़ाइद	मौलवी क़ासिम नानोतवी
24)	बकरा देवी	हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रोपड़ी (ग़ैर मुक़ल्लिद)
25)	तर्जमानुल कुरआन	अबुल आला मौदूदी
26)	नज़लुल अबरार	नवाब वहीदुज़्ज़माँ (ग़ैर मुक़ल्लिद)

याद दाश्त !

याद दाश्त !

Scanned by CamScanner

MAKTABA QADRIA

Barhani Road, Itwa Bazar, Distt. S. Nagar, (U.P.) Ph.: 05541-231317

Khirki Tafazzul Husain, Kalan Mahal, Dariaganj, Delhi-110002

Mobi.: 9312347876 Email.: maktabaqadria@gmail.com

Web: www.maktabaqadria.com